वर्ष 27 अंक 12 दिसम्बर - 2025 ₹ 3

शबरी

SHABARI SIKSHA SAMACHAR शिक्षा समाचार

अहिन्दी भाषा प्रदेश तमिलनाडु के सेलम से 26 वर्षों से निरंतर प्रकाशित एक मात्र मासिका

सिरप्पुली नाम इनका, सेवा करते सतत ।
भक्त की सेवा कर ये, पाए थे शिव चरण ।।

Pathra Lekhan

சபரியின் கற்போம் கடிதம்

உள்ளத்து
உணர்வுகளைப்
பிறரோடு
பகிர்ந்துகொள்ள ...

எல்லாச் சூழ்நிலைகளிலும் கடிதம் எழுதுவது எப்படி ...

கடிதம் பல வகைகளில் மனிதனுக்கு உதவி வருகிறது. இமெயில் வருகைக்குப் பின்னும் கடிதங்கள் இன்றும் போற்றப்பட்டு வருகின்றன. நமது அன்றாட வாழ்வில் பயன்படும் பல கடிதங்களை ஹிந்தியில் உங்களுக்காக தொகுத்தளித்துள்ளோம். அதே கடிதத்தை அழகுத் தமிழிலும், ஆங்கிலத்திலும் உங்களுக்காக வழங்கியுள்ளோம்.

JUST ₹150/- ONLY

SHABARI SHABDHA SAAGAR

Trilingual Dictionary

1632 Pages

Just ₹750.00 only

51,000 Words

ஹிந்தி
ஹிந்தி
ஆங்கிலம்
தமிழ்
அகராதி

கற்போர் கற்பிப்போரின்
சொல் வளம் பெருகிட
ஹிந்தியோடு தமிழும் ஆங்கிலமும்
தங்களின் நுனி விரலில் தவழ்ந்திட
51,000 சொற்களின் அணிவகுப்பு
சபரியின் தரமானதோர் படைப்பு

வாழ்க்கை பயனுற வானம் வசப்பட
வார்த்தைகளால் வளம் பெற்று சிறந்திட

छठा शबरी परिवार मिलन

अत्यंत हर्ष, गर्व और बड़े प्यार के साथ हम घोषित करते हैं कि आगामी छठा शबरी परिवार मिलन फ़रवरी या मार्च महीने में कोयंबतूर में संपन्न होनेवाला है । हिन्दी प्रचारक तथा हिन्दी प्रेमियों से अनुरोध है कि इस मिलन में भाग लेनेवाले तुरंत हमसे इस नंबर पर 0427-4265414 वाट्सएप द्वारा संपर्क करें ।

6வது சபரி பரிவார் மிலன்

இதயங்களை இணைத்திடும் '6-வது சபரி பரிவார் மிலன்' விழா, வரும் பிப்ரவரி அல்லது மார்ச் மாதத்தில் கோவையில் நடைபெறவுள்ளது என்பதை பெருமகிழ்ச்சியுடன் தெரிவித்துக் கொள்கிறோம். இவ்விழாவில் பங்கேற்க விரும்பும் அனைத்து ஹிந்தி பிரச்சாரக்கர்கள் மற்றும் ஹிந்தி ஆர்வலர்கள், 0427-4265414 என்ற எண்ணில் வாட்ஸ்அப் (WhatsApp) மூலம் முன்பதிவு செய்யுமாறு அன்புடன் கேட்டுக்கொள்கிறோம்.

इस अंक में

अनमोल वचन 6
संपादक की कलम से 7
प्रतीक्षा 8
हाइकु 9
हमारा तमिलनाडु 10
सादगी की खुशबू 12
आग सी 13
भारत में मकर संक्रांति की विविध 14
उलझन 15
हिन्दी-संस्कृत वर्णमाला 16
रास्ते 17
खुशियों का खजाना 18
दो कविताएँ....................... 19
धर्म ध्वजा महोत्सव 20
और तुम... 21
हरियाणा भूमि 22
आदत 23
गजल 23
मिट्टी में मिल जाना 24
माँ गई बाजार..................... 24
रचें मानवता के छंद ! 25
कहते हैं यीशु 25
महान संत शिव भक्त-तमिल नायनमार 28
यह कैसा कर्तव्य... ! 30
कौन कहता हम किसी से प्यार... 30
वो एक शख्स बेवजह ही वजह..... 31
युद्ध और शांति 31
गजल 32
चाह 32
ड्यूटी लगती नहीं सगी........... 33
विज्ञान : ज्ञान का वरदान 34
ग़ज़ल 35
चलना जरूरी है................... 36
अग्नि पथ 36
अपनापन 37
मनहरण घनाक्षरी 37
जज़्बात का समंदर 38
यह जीत है, प्रचंड है 38
सही वक्त का इंतजार 39
शिव शक्ति 39
प्रेम, मान-सम्मान, यश अर्जन ... 40
जय माँ शारदे 40
पाठकों के पत्र 41
नवांकुर 42
पठितौ, अभिरुचितौ, अनूदितौ ... 44
தமிழமுது 45
அருள் உலா 46

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஜனவரி-2026	25-01-2026	01-10-2025 to 30-11-2025	05-12-2025
ஏப்ரல்-2026	19-04-2026	01-01-2026 to 28-02-2026	05-03-2026
ஜூலை-2026	19-07-2026	01-04-2026 to 31-05-2026	05-06-2026
அக்டோபர்-2026	18-10-2026	01-07-2026 to 31-08-2026	05-09-2026

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

⋆ **D.D.** ***மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.***

our web portal @ **https://shabari.in**

உ

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी

SHABARI SALEM

ज्ञानात् परं सुखम्

पढ़ो मन भरके

शबरी

शिक्षा समाचार

वर्ष 27, अंक 12 | मूल्य ₹ 3/- | दिसम्बर - 2025

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : **9443165414**

Office Phone : **9842765414**

Office Phone : **9443365414**

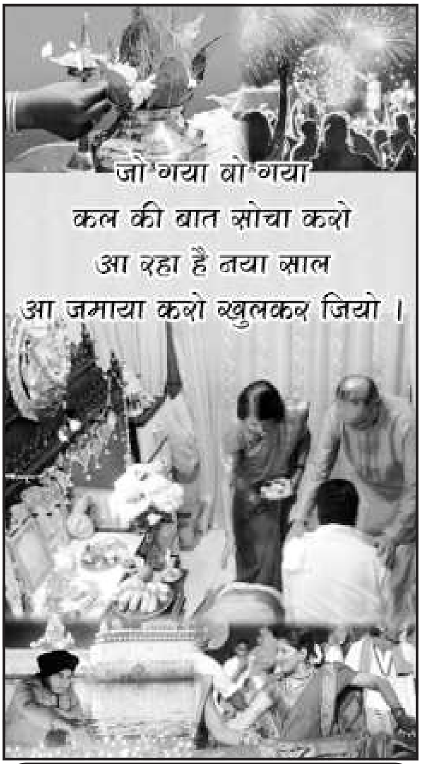

VANI VIKAS NUMBER

0427-4265414

0427-4552100

Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

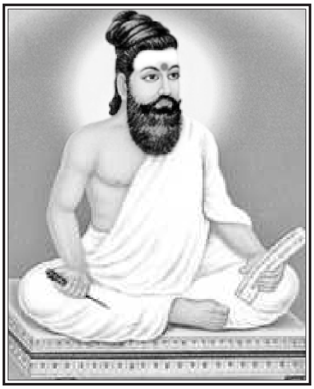

अनमोल वचन

लज्जा त्यागना

अपनी प्रेमिका के प्यार नहीं मिलने पर, काम भावना से सताए जाने पर अपना मान सम्मान लज्जा सब त्यागकर प्रेमि को ताड के पत्तों से घोडा या हाथी का रूप अपनाकर अपने गाँववाले के सामने प्रेमिका का नाम जोर से चिल्लाते हुए प्यार पाने की आखिरी कोशिश प्रेमी करता है । उसको इसे छोडकर अन्य कोई रास्ता नहीं मिलता है ।

मेरे तन और जान प्रेमिका की दूरी को सह नहीं पा रहे हैं । इसलिए लज्जा त्यागकर उसके लिए मैं ताड के पत्ते से घोडा बनकर उसके सामने प्यार की भीख माँगने तैयार हो चुका हूँ ।

सही पौरूषता के साथ लज्जा भी मैं किया करता था । लेकिन मेरी प्रेमिका के वियोग से उसे पाने की इच्छा से लज्जा छोडने के लिए तैयार हूँ ।

प्यार के बाढ में पौरूषता के साथ लज्जा भी प्रेमिका के प्रति काम भावना से चले जाते हैं । मैं तो कुछ भी करने तैयार हो जाता हूँ ।

कटी में मेखला और हाथों में चूडी पहननेवाली मेरी प्रेमिका, शामको उत्पन्न होनेवाले रोग प्यार और प्यार पाने के लिए लज्जा त्यागकर घोडा बनकर उसका नाम चिल्लाने के लिए मुझे विवश कर दिया है ।

मेरी प्रेमिका की याद में मेरी आँखें नींद अपना नहीं पा रही हैं । इसलिए लज्जा त्यागकर शरीर भर भस्म लेपकर, अर्क की माला पहनकर, घोडा या हाथी बनकर उसका नाम लेते हुए प्यार की भीख माँगने की सोच मैं अर्धरात्रि में भी कर रहा हूँ ।

सागर के समान अनंत दुख प्रदान करनेवाला काम भाव को सहकर पुरुष के समान ताड के पत्ते पर न चढेनवाली नारी के समान उच्च गरिमामय जन्म या जीव दूसरा कोई नहीं है ।

इनको अपनी मन की बात छुपाना नहीं आता । ये तो बहुत ही भोले हैं । ये भलमानस है । ऐसे नहीं होकर प्यार जो है वह सबके समाने प्रकट हो ही जाता है ।

मेरा प्यार मेरे मन के कारण किसी को न बताकर गली में उतरकर प्यार को प्रकट करने के लिए हर कहीं भटक रहा है ।

प्यार रूपी रोग से सताए जानेवाले दुख को जो अनुभव नहीं किया है वही प्यार से उलझनेवाले लोगों के व्यवहार को देखकर उनपर हँसेंगें ।

✍ ***संपादक की कलम से ...***

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

साधारण जनता को अपने परिजनों का विकास, सुख संपत्ति पर हर्ष और उल्लास का अनुभव होता है । कुछ असामान्य या बलमानस मानव को तो किसी का भी तरक्की आनंद का अनुभव प्रदान करता है । जिस प्रकार बाबा हरिश्चंद्र ने कहा था "**निज की उन्नति, उन्नति नहीं, समाज और देश की उन्नति ही उन्नति है ।**" सबके साथ सबका विकास ही देश और जनता को आगे बढ़ा पाएगा ।

बात जब देश की आती है तब सज्जन तो अपने प्रांत की नहीं या मुल्क की नहीं संपूर्ण देश के प्रति अपना समर्पण भाव तथा प्यार जताते हैं । आज की इस दुनिया में चाहे कुछ राजनीति किया है मतदान को उद्देश्य बनाकर प्रांत को अधिक महत्व दे सकते हैं । भाषा और सीमा को लेकर जनता में मतभेद जागने का प्रयास कर सकते हैं । प्रांतीय भाषा को लेकर आज भी कुछ जगहों में दंगे और भेदभाव स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं । लेकिन कभी भी किसी भी हालत में भारत हमारा जो प्यारा देश है वही सबके लिए प्रदान ठहरता है ।

देव के प्रति भक्ति के साथ देशभक्ति ही देश को आगे बढ़ा सकती है । हर भारतीय के लिए यह गर्व की बात है कि आज हमारा यह प्यारा भारत देश दुनिया के तीसरा आर्थिक देश है जो हाल ही में जापान को पीछे करके आगे बढ़ चुका है । हर भारतीय के लिए यह गौरव की बात है । भारत देश है महान, बहुत जल्द ही बनेगा यह विश्व का प्रधान ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

भारत देश का विकास देखकर,
खिल रहा है मन हमारा ।
आओ भरपूर प्रयास करें हम,
गाँव में सब मिलकर भारत देश है हमारा ।।

प्रतीक्षा

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

अरे, यह मुझे क्या हो गया ? दो-तीन दिन से वही सोच रहा हूँ। सुबह, शाम चलते-फिरते, दोपहर को, खाना खाते वक्त, हर कहीं वही सोच है । दिमाग में और कोई बात को स्थान ही नहीं मिल रहा है । वही बात, वही आवाज, वही सोच उसी में पूरा दिन कट रहा है । मैं तो खाना खाता हूँ, मंदिर जाता हूँ, अपने रोजमर्रा कार्य जो भी है उन सब में ऐसे ही लग रहा हूँ जैसे सालों से कर रहा था । पता नहीं दिल को क्यों चैन नहीं मिल रहा है ? एक अजीब-सा बोझ या दबाव निरंतर बना रहा है । बाकी किसी बात में मन बिलकुल नहीं लग रहा है । नींद तो आ रही है लेकिन सपने में भी वही शब्द गूँजते जा रहे हैं । करवटें लेता रहता हूँ, जागा तो बिलकुल नहीं लेकिन पूरी नींद नहीं आ न पा रहा हूँ ।

मुझे मेरी बचपन की याद आती है । मेरे माता-पिता मेरे सामने आ जाते हैं । कितने प्यारे हैं मेरे माता-पिता । दुनिया के भरपूर प्यार मुझ पर बरसाने से दोनों कभी नहीं चूकते थे । हर रोज जब मैं विद्यालय से घर वापस आता था, आते ही माँ से पूछता था कि आज पापा क्या लाये हैं ? एक भी दिन ऐसा नहीं था कि पापा ने मेरे लिए कुछ नया नहीं लाए । खाना कपड़ा या खिलौना किसी चीज की कमी कभी नहीं थी । मेरी माँ हर बार इतने प्यार से खाना बनाती थी कि दुनिया का सबसे श्रेष्ठ स्वाद उसी से हमें मिल जाता था । जीवन के सबसे आनंदमय बचपन को हर एक के जैसे मैं भी भूल नहीं पाता हूँ । एक बार फिर से मुझे मेरा बचपन वापस मिल जाता, उस अनंत, आनंदमय जीवन को मैं एक नहीं हजारों बार जीना चाहता हूँ ।

अपने भाई-बहन के साथ जो जिंदगी बनी रही उसका तो शब्दों में वर्णन कर पाना मुमकीन नहीं है । मेरे माता-पिता और भाई बहन मेरी दुनिया रही । मेरी दुनिया में कभी और किसी को कोई स्थान ही नहीं था । हर बार, हर तरह से मेरे पिता मेरी बड़ोती तो चाहते थे लेकिन कभी उन्होंने यह नहीं बताया कि मुझे क्या बनना है । दिन, माह तथा साल काटने लगे पढ़ लिया मैं कुछ बन भी पाया ।

मेरी अर्धांगिनी धर्मपत्नी से मेरी जिंदगी एक सुखमय मोड लेने लगी । शायद वह जिंदगी का दूसरा पहल था । उमंग और उल्लास भरनेवाला अत्यधिक सुखद पल । मैंने उसे पत्नी का सम्मान दिया था बदले में उसने मुझे पिता का महानतम सम्मान दिया । बच्चे बढ़ने लगे और मैं भी दौड़ते रहने लगा । जिंदगी अब भी सुखद ही है ।

लेकिन सालों बाद मुझे ऐसे क्यों लगने लगा है कि मैंने कुछ गलती कर दी । मेरे बेटे के वे शब्द । हाँ वे शब्द जो मुझे सोने नहीं दे रहे हैं । किसी और बात में ध्यान देने नहीं दे रहे हैं । बार-बार वे शब्द मेरे कानों में ऐसे गूँज रहे हैं जैसे वही भगवतगीता हो । उन शब्दों को वह अपने मन से बोला था । उसमें उसकी कोई गलती नहीं है । उसमें जो सच्चाई है वह मुझे भरपूर सोच में डाल चुका है । उसने बड़े प्यार से कहा था - पापा मेरे बेटे को आपके पैसे नहीं चाहिए, आपकी संपत्ति नहीं चाहिए बस सिर्फ आपका समय चाहिए ।

मन ही मन में मैंने ठान लिया - समय क्या है, अपनी पूरी जिंदगी उसका नाम कर दूँगा । अब शायद मुझे मिलेगा । मिलेगा नहीं ?

हाइकु

- श्री. राजेन्द्र परदेसी, लखनऊ, उ.प्र.

\- 1 -

सिद्धार्थ होता
तथागत महान
वृक्ष के नीचे

\- 2 -

वृक्ष शिखर
व्याकुल से लगते
छूने को नभ

\- 3 -

मन की व्यथा
छलकती नेत्रों से
तरल रूप

\- 4 -

व्यथा में डूबा
टिमटिमाता दीया
निहारती माँ

\- 5 -

हवा हो जाता
सीमा जब लाँघता
पानी का ताप

\- 6 -

अपने सभी
पर भर न पाते
एकांकीपन

\- 7 -

बहती नदी
सागर में मिलती
खोके अस्तित्व

\- 8 -

नदी के तट
होकर भी अलग
चलते साथ

\- 9 -

उगे ज्यों सूर्य
प्रकाशमय करो
लाओ सबेरा

\- 10 -

वसंत आते
भवरों को कलियाँ
स्वयं लुभाती

\- 11 -

साँझ झुकती
आस्था वह पूजती
दीप जलाये

\- 12 -

कोहरा घना
भयभीत सूरज
भींचता आँख

हमारा तमिलनाडु

संपूर्ण जगत में सब प्रकार से श्रेष्ठ देश हमारा भारत देश है, आप इस महान देश के पुत्र हैं इस विचार को कभी मन से मत हटाइए – महाकवि भारतियार । भारत देश की ही नहीं बल्कि संपूर्ण जगत में सबसे प्राचीनतम भाषा है अमर अजय अति गरिमामय भाषा है तमिल भाषा । पत्थर के बनने के पहले, मिट्टी के भी पहले सबसे प्राचीनकाल में बनी हुई भाषा है तमिल । तमिलनाडु के चेर, चोल और पांडिय राजाओं की तूती संपूर्ण जगत में बोलती थी । भारत पार करके विदेशों में भी इनका शासन चलता था । तमिल राजाओं की वीरता तथा नेक प्रियता का गायन पूरा संसार किया करता था । भारत देश के चरणों में रहने पर भी तमिलनाडु की कीर्ति तथा क्षमता आकाश को छूनेवाली है । प्रकृति और संस्कृति दोनों का बहुत ही मनोहर रूप तमिलनाडु प्रदेश में पाया जाता है । तमिलनाडु प्रदेश धार्मिक सांस्कृतिक प्राकृतिक विशेषताओं के साथ सुरम्य तथा घूमने लायक प्रदेश है ।

धार्मिक पर्यटन :

तमिलनाडु धर्म प्रधान भूमि है । यह सनातन धर्म की अपनी भूमि है । चेर, चोल और पांडिय राजाओं से निर्मित हजारों साल पुराने, बहुत सारे मंदिर इस प्रदेश में पाए जाते हैं । शैव धर्म के प्रचार प्रसार में तमिल के 63 नायनमार लगे हुए थे । तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में शिव के कपालेश्वर मंदिर है दक्षिणी छोर रामेश्वर में भगवान श्री राम से पूजित शिव मंदिर विद्यमान है । तमिलनाडु के कारण ही महादेव शिव को दक्षिण राज्य के शिव की जय हो कहकर संबोधित करते हैं । भारत भर के शिव मंदिरों में बहुत ही पुरातन और इतिहास प्रसिद्ध मंदिर तमिलनाडु में ही पाए जाते हैं । वैष्णव धर्म के 12 आलवार इसी प्रदेश में जन्मे थे । ओम नमो नारायण मंत्र की शुरुआत इसी प्रदेश में हुई थी । भगवान विष्णु के बहुत सारे सुप्रसिद् और पुराणतम मंदिर भी यहीं पाए जाते हैं । मदुरै तमिलनाडु का मंदिर शहर माना जाता है । भगवान कार्तिकेय यहां के प्रमुख भगवान है । इनके 6 प्रसिद्ध स्थल है इनमें

प्रथम और अंतिम स्थान मदुरै में है । तिरुचेंदूर, पलनी, स्वामीमलै और तिरुत्तणी आदि अन्य मंदिर भी हैं । मदुरै मीनाक्षी मंदिर संसारपुर में प्रसिद्ध तथा वंदनीय मंदिर है । कुंबकोणम नवग्रह मंदिर के साथ-साथ बहुत ही प्राचीनतम मंदिर का अपना स्थल है । कहाँ जाता है कि तमिलनाडु के चिदंबरम शहर में जहाँ शिवजी नृत्य करते हैं उनके अंगूठे का जो स्थल है वही संसार का केंद्र बिंदु है । तिरुचि, तेनकाशी, चेनकोट्टई, तंजावूर, आदि अनेक शहरों में प्राचीनतम मंदिर पाए जाते हैं ।

प्राचीनतम तथा विश्व विख्यात मंदिर तथा स्मारक :

तंजावूर स्थित ब्रगदीश्वरर मंदिर युनेस्को से प्रसंशित मंदिर है । कहाँ जाता है कि यहाँ का जो नदी है उसका निर्माण छत्रपति शिवाजी के पुत्र संभाजी महाराज से हुआ था । चेन्नई के पास स्थित महाबलीपुरम भी यूनेस्को से मान्य है । यहाँ के गुफा मंदिर मानव मन को छू लेते हैं । दक्षिणी छोर में धनुषकोडी नामक प्रदेश समुद्र में डूब चुका है । इनमें जो अवशिष्ट बाकी है उसे देखकर मानव अचरज में पड़ जाता है । समुद्र के नीले और हरे रंग को अपने दाएँ और बाये और देखकर मन खिल जाता है ।

प्राकृतिक सुषमा :

तमिलनाडु के पहाड़ी प्रदेशों में ऊटी, कोडैकानल, येरकॉड आदि का सैर करना मानव के मन, तन तथा आत्मा को प्रफुल्लित कर देता है । तमिलनाडु के विभिन्न भागों में स्थित जंगलों में हम सैर कर सकते हैं और अनेक जानवरों को देखकर आनंद अपना सकते हैं । राजधानी चेन्नई में स्थित मरीना समुद्र तट दुनिया के लंबी समुद्र तटों में दूसरा है । रामेश्वरम और कन्याकुमारी की प्राकृतिक सुषमा देखने लायक है । कन्याकुमारी में विवेकानंद तपस्या किए थे । यहाँ के तिरुवल्लुवर की प्रतिमा अति मनोहर है । कूट्रालम का झरना विश्व विख्यात है ।

क्या खरीद सकते हैं ?

तमिलनाडु संस्कृति से भरी एक विशिष्ट प्रदेश है जहाँ बहुत कुछ खरीदने को मिल जाता है । तंजावूर में तलायाट्टी यानी सदा अपने सिर को बहुत ही

मनोहर रूप से हिलानेवाली गुड़िया आपको मिलेगी । कांचीपुरम के रेशम की साड़ियाँ दुनिया भर प्रसिद्ध है । मंदिर शहर कुंबकोणम में आपको सबसे बढ़िया कॉफी मिलेगी । मदुरै में मीनाक्षी मंदिर के कुमकुम और यहाँ के चमेली के फूल काफी प्रख्यात है । सेलम के इलामपिल्लई में साड़ियाँ बहुत ही मशहूर है । तिरुपुर के कपड़े विश्व विख्यात है । कोयंबतूर में दुनिया के कोने-कोने तक बड़े-बड़े मोटर भेजे जाते हैं । आम्बूर केचमड़े के तरह-तरह की चीजें विख्यात है । तूतुकुड़ी के नमक, तिरुनेलवेली का हलवा, तिरुचेंदुर की मिठाई, श्रीविल्लीपुथूर का पेड़ा, कोविलपट्टी के पकवान, दिनदुक्कल का ताला, कांग्रेयम के बैल, मानप्पराय का मुरुक्कू आदि बहुत ही मशहूर है ।

यही नहीं भारतीय संस्कृति से संबंधित अनेक अनेक स्थल तमिलनाडु भर में पाए जाते हैं । यहाँ के विभिन्न शहरों में पुराने किले देखने को मिल जाते हैं । इसके अलावा वन्य मृगो को देखने तथा रसास्वादन करनेलायक अनेक पर्यटक केंद्र भी तमिलनाडु में स्थित है । तमिलनाडु पर्यटन स्थानों से भरा पड़ा है । अपनी जिंदगी में काम से कम एक बार तमिलनाडु के सुंदर तथा सुमधुर प्रदेशो पर विचरण कर अपने आप को धन्य जरुर महसूस करें । तमिलनाडु आवे धन्य हो जावें ।

सादगी की खुशबू

– डॉ. अशोक, पटना, बिहार

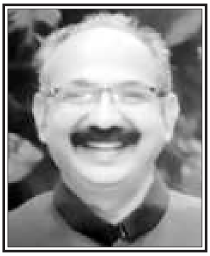

धूप की किरणें,
बिन बोले कह गई हैं –
जीवन की बात ।
मिट्टी की सौंधी,
बारिश में भीगती है,
मन मुस्कुराता ।
नंगे पांव चल,
ओस पर रुक जाना,
शांति वहीं है ।
चाय की खुशबू,
पुरानी यादें लेकर,
दिल तक पहुँची ।
छोटे सपनों में,
बड़ा सुख बसता है,
सादगी गाती ।
शब्द नहीं कहते,
नेत्रों की भाषा में,
प्रेम बहता है ।
सूरज ढलता है,
पर उजाला रह जाता,
मन के भीतर ।
मौन ही मधुर,
जब सच्चा हो जीवन,
खुशबू बनता ।

आग सी

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

चलती रहती है यह जिंदगी कभी न रुकती है
साथ दौड़ना मुश्किल लग रहा है भागती है
तेरे मेरे कहने पर नहीं रुकती वह चलती है
इसके या उसके कहने पर भी न बदलती है
कल क्या होगा यह तो कोई जानते नहीं है
किसी को कुछ बताये बिना जिंदगी दौड़ती है
कुछ न लाने पर भी कुछ बनकर न आने पर भी
कभी चैन नहीं देती है दौड़ती रहती है जिंदगी ।

कुछ बनना चाहते हो तो भागो उसके पीछे
कुछ बन गया तो भी रुकना नहीं भागो पीछे
नाचना चाहते हो तो नाच नहीं सकते हो जानो
नचाती है जिन्दगी उसके पीछे भागना अब जानो
इच्छा अंतहीन है उससे उत्पन्न दुःख भी अंतहीन
इस धरती में जीनेवाले असंतुष्ट व्यक्ति भी अंतहीन
मानना हो तो मानो कभी तुम संतुष्ट नहीं ठहरोगे
मानकर बातें दिल की चीजों के पीछे दौड़ते रहोगे ।

सपने पूरे हो जाते हैं कभी कभी संभव बन जाते हैं
सपना पूरा हो जाने पर फिर से सपने आ जाते हैं
कितना भागोगे, अरे कब तक भागोगे ? बता अभी
जिन्दगी में कभी आत्मसंतुष्टि की बात होती नहीं
साधु संत नहीं बनना है तुझे साधारण मानव बनो
सब कुछ पाने तू जन्मा नहीं जो है उसे अपनाओ
अपने पास जो है, उससे तुम जीवन को चलाओ
आग सी जलती है इच्छा उसे विवेकी बन बुझाओ ।

भारत में मकर संक्रांति की विविध छटाएँ

– श्री. महेन्द्र तिवारी, जनपथ, नई दिल्ली

भारत विविध परंपराओं और संस्कृतियों का संगम है, जहाँ प्रत्येक पर्व अपने भीतर आस्था, कृतज्ञता और उत्सव का अनोखा संदेश समेटे हुए है। इन्हीं पर्वों में से एक है मकर संक्रांति, जो सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने का पवित्र अवसर है। यह दिन न केवल एक खगोलीय परिवर्तन का प्रतीक है, बल्कि जीवन में नई ऊर्जा और उजास के आगमन का उत्सव भी है। इस दिन से सूर्य उत्तरायण होता है और इसी क्षण से शुभ कार्यों की शुरुआत मानी जाती है।

भारत के अधिकांश भागों में यह नवीन फसल के आगमन का प्रतीक पर्व है। इस दिन तिल और गुड़ का विशेष महत्व है। तिल का अर्थ है सहिष्णुता, और गुड़ का अर्थ है मधुरता – दोनों मिलकर बताते हैं कि जीवन में मिठास तभी है जब हम एक–दूसरे के प्रति सहनशील और प्रेमपूर्ण हों।

भारत के विभिन्न राज्यों में यह पर्व अलग–अलग नामों और रूपों में मनाया जाता है। उत्तर भारत में इसे मकर संक्रांति के नाम से जाना जाता है। लोग गंगा या किसी पवित्र नदी में स्नान करते हैं और तिल–गुड़ का दान करते हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार में यह खिचड़ी पर्व भी कहलाता है, जहाँ लोग दाल–चावल की खिचड़ी बनाकर प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। पंजाब में इसे लोहड़ी के रूप में मनाया जाता है, जो फसल कटाई और अग्नि पूजन का पर्व है। ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अलाव जलाकर गीत गाते हैं, नृत्य करते हैं और नई फसल की खुशियाँ बाँटते हैं।

गुजरात और राजस्थान में यह पर्व उत्तरायण कहलाता है। यहाँ आसमान रंग–बिरंगी पतंगों से भर जाता है। पतंगबाज़ी इस पर्व का मुख्य आकर्षण होती है, जो जीवन के उल्लास और स्वतंत्रता का प्रतीक है। वहीं महाराष्ट्र में लोग ''तिळगुळ घ्या, गोड गोड बोला'' कहकर एक–दूसरे को तिलगुड़ देते हैं, जिसका अर्थ है – ''तिल–गुड़ लो और मीठी बोली बोलो।'' यह संदेश देता

है कि जीवन में मधुरता बनाए रखना ही सच्ची पूजा है ।

दक्षिण भारत में इस पर्व का स्वरूप कुछ भिन्न है । तमिलनाडु में इसे पोंगल कहा जाता है, जहाँ सूर्य देव को अन्न का नैवेद्य अर्पित किया जाता है । चार दिनों तक चलनेवाले इस उत्सव में गायों की पूजा, घर की सजावट और पारंपरिक व्यंजन का विशेष महत्व है । आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में भी यह संक्रांति पर्व के रूप में मनाया जाता है, जहाँ घर-घर में नवविवाहित जोड़ों को विशेष रूप से आमंत्रित कर आशीर्वाद दिया जाता है ।

इस प्रकार, मकर संक्रांति केवल सूर्य के संक्रमण का दिन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की विविधता, सामाजिक एकता और कृषि परंपरा का उत्सव है । मकर संक्रांति हमें यह भी स्मरण कराती है कि जब समाज के हर व्यक्ति के भीतर सहिष्णुता और मधुरता का संयोग होगा, तभी सच्चे अर्थों में समरसता और उजाला फैलेगा । यही इस पर्व का आध्यात्मिक सार है – ''अंधकार से प्रकाश की ओर, कटुता से मधुरता की ओर, और विभाजन से एकता की ओर बढ़ना ।''

उलझन

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

इस दुनिया में ऐसा कौन है,
नहीं है जिसके जीवन में उलझन,
झोंक देते हैं लोग उबरने इस स्थिति से
और कर लेते हैं स्वाहा अपना तन-मन,
उलझनें कई प्रकार के हो सकते हैं,
कुछ हंस सकते हैं तो कुछ रो सकते हैं,
किसी को जीने की उलझन,
किसी को पीने की उलझन,
कुछ को सीखने की उलझन,
कुछ को लिखने की उलझन,
किसी की उलझन ज्यादा मद पाने की,
किसी की उलझन उचित पद पाने की,
और किसी की अहसान जताने की,
किसी के अहसानों के बोझ में दब जाने की,
बहुत गुजार देते हैं जीवन
गुलामी में सर नीचे धर के,
कई ऐसे भी होते हैं जो कुछ बड़ा कर जाते हैं
व बहुतों की जिंदगी बना जाते हैं खुद उबर के,
बिना चुनौती, बिना उलझन भी क्या जिंदगी होगी,
पुरखों की संपत्ति खाये जाएँगे बन कर रोगी,
हर उलझन से मजबूत होने का इरादा कीजिए,
मजबूत हो देश यह सोचने का वादा कीजिए ।

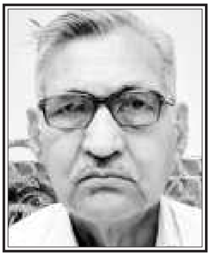

हिन्दी-संस्कृत वर्णमाला

– डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष',
आगरा, उ.प्र.

हिन्दी–संस्कृत स्वर संख्या, कुल बाइस जुड़ हो जाती है ।
ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत जोड़–मिला, भाषा व्याकरण बनाती है ।
पाँच वर्ग क च ट त प व्यञ्जन, हो जाते पच्चीस सभी,
अंतःस्थ, ऊष्म आठों मिल, तेतिस कुल हो पाती है ।

या रा ला वा चार वर्ण थे, अंतःस्थ कहलाते हैं ।
शा षा सा हा चारों मिलकर, ऊष्म वर्ण बन जाते हैं ।
अनुस्वार–अनुनासिक मात्रा, एक विसर्ग और भी है,
उपध्मान–जिह्वामूलीय दो, ह्रस्व–दीर्घ जुड़ जाते हैं ।

अक्षर एक वर्णमाला से, लुप्त हुआ बतलाते हैं ।
मात्राएँ, स्वर–व्यञ्जन सारे, त्रैसठ योग बनाते हैं ।
भाषा संस्कृत–हिन्दी का व्याकरण शुद्धि को ले आता,
संस्कृत भाषा है सम्राज्ञी, हम हिन्दी पा जाते हैं ।

शा षा सा हिन्दी वर्णों का, पृथक करें हम उच्चारण ।
कंठ–ध्वनि में परिवर्तन कर, करें शुद्धि का अन्वेषण ।
प्रथम वर्ण 'शा' तालव्य है, मध्यम 'षा' मूर्धन्य रहा,
अंतिम 'सा' है दंव्य, व्याकरण है उच्चारण का कारण ।

भाषा शुद्ध निबंध–काव्य में, हिन्दी मधुर सुबोधित हो ।
शब्द सरल, आकर्षक हों, अक्षर–अक्षर संशोधित हो ।
संस्कृत हिन्दी उत्सर्जन, वर्ण–शब्द आयातित हैं,
उर्दू, अँगरेजी, अरबी इत्यादि शब्द अवरोधित हो ।

वर्णमाला व्याकरण में अकारादि स्वर–व्यंजनों का स्वरूप निम्नवत् है –

स्वर		
ह्रस्व	**दीर्घ**	**प्लुत**
अ	आ	अ 3
इ	ई	इ 3
उ	ऊ	उ 3
ऋ	ॠ	ऋ 3
लृ	0	लृ 3
0	ए	ए 3
0	ऐ	ऐ 3
0	ओ	ओ 3
0	औ	औ 3
कुल संख्या = 22		
22 + 33 + 08 = 63		
——		

व्यंजन		
क वर्ग	– क ख ग घ ङ	25 + 08 = 33
च वर्ग	– च छ ज झ ञ	
ट वर्ग	– ट ठ ड ढ ण	
त वर्ग	– त थ द ध न	
प वर्ग	– प फ ब भ म	
अंतःस्थ	– य र ल व	
ऊष्म	– श ष स ह	

अयोगवाहरूप चिह्न			
:	विसर्जनीय	ꣳ	ह्रस्व
ᳵ	जिह्वामूलीय	ꣴ	दीर्घ
ᳶ	उपध्मानीय	ँ	अनुनासिक
ं	अनुस्वार	ळ	अक्षर (लुप्त)
——		चारों यम भी कहलाते हैं	
कुल संख्या – 08			

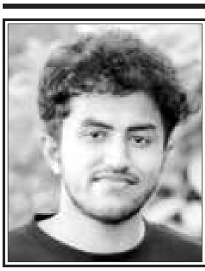

रास्ते

– श्री. मोहित.जे. संतोष, श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

कभी गिरते हैं हम कभी दौड़ते भी हैं
कभी रुकते हैं हम कभी उड़ते भी है
कभी गाते हैं है खुशियों का गाने
और कभी–कभी हो जाते हैं हम परेशान ।

कभी मिलते हैं हम अजनबियों से
कभी रहते हैं हम अनजान बनकर
यह सारे नाटक और यह तमाशा
कल बनेगा शायद एक इतिहास

हर पल है तेरा संवारो
हर लम्हा हर सवेरा
आते रहेंगे कई मौके
उसे करो मत तू बेकार

रास्ते हैं अनेक
फैसले भी अनेक
चुनना है काम तेरा
उसे अच्छे से चुनो मेरे यारा ।

खुशियों का खजाना

– डॉ. प्रमोद कुमार 'अनंग',
गाजीपुर, उ.प्र.

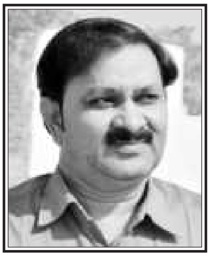

वे प्यार भरे बचपन के दिन, वह गाँव पुराना याद आया ।
उस खिली सुनहरी धूप तले, डाली का दाना याद आया ।।
महुआ, पीपल थे चौकीदार, तो नीम शुद्धता के साधन ।
अरहर के खरहर से दुआरभर को, चमकाना याद आया ।।
वह गाँव नहीं घर था अपना,खलिहान खेत सब थे अपने ।
पोरे पर बिना बिछोने के, वह नींद सुहाना याद आया ।।
जब चढ़े पलानी पर अपने, लौकी नेनुआ के लालच में ।
भुजिया चटनी संग लिट्टी ले, माई का बुलाना याद आया ।।
उत्तम फल-सब्जी उगा-उगा, थोड़ा रख बेच दिया करते ।
कीचड़ पानी में रेंग-रेंग, वह तालमखाना याद आया ।।
दो चोटी वाली वह लड़की, फीते से बंधे फूल सुन्दर ।
अल्हड़ सी खूब सांवली सी, उसपे बलखाना याद आया ।।
सावन में भीग-भीग सोहनी, आलू उखाड़कर भून दिया ।
ले नून लगा वह गरम-गरम, मुँह बाकर खाना याद आया ।।
गहरी निद्रा में स्वप्न मधुर, तब जगा दिये थे पढ़ने को ।
बैठा आधा कम्बल ओढ़े, वह झपकी आना याद आया ।।
चूरा मूसल से कूट-कूट, भेली संग मुंह भर-भर खाना ।
काका फूँके 'होरहा' मन से, तब उन्हें मनाना याद आया ।।
हाँ एक-एक से रिश्ते थे, किस घर से हूँ था उन्हें पता ।
छोटी से छोटी गलती पर, वह आँख चुराना याद आया ।।
था व्यस्त गाँव भर शादी में, बुआ की आई थी बरात ।
ना हलवाई ना टँट-घँट, वह द्वार सजाना याद आया ।।
हर एक काम हर रश्मों पर, थे गीत गवनई हो जाते ।
वह दौड़-दौड़ वह पूछ-पूछ,वह पात खिलाना याद आया ।।
उत्सव के अलग मजे होते, हफ्ते दस दिन सब रहते थे ।
कुछ पाहुन फूफा लोगों का, वह गाल बजाना याद आया ।।
अब लोग सिपारिस पर आते, अब होते खेल दिखावे के ।
हम कैद हुए दीवारों में, खुशियों का खजाना याद आया ।।

दो कविताएँ

– श्री. उषा टिबरेवाला,
चेन्नै, तमिलनाडु

हुकूमत

तेरी हुकूमत चलती रही मुझमें,
मुझको कुछ पता नहीं,
खबर नहीं, मैं बस गई कब, तेरे दिल में, कुछ पता नहीं,
होने लगी तेरे प्यार की बरसा मेरे जीवन में, तेरा बादल बन जाना, कब कैसे, कुछ पता नहीं,
खुद में लिपट कर सोता हूँ,
तेरी याद में जगता रात भर,
आँखो में नींद का कुछ पता नहीं,
दिल में प्यार की नदी–सी बहती है,
फिर भी प्यासा रह जाता, यह दिल, कैसी है यह प्यास, कुछ पता नहीं,
मेरे सूने दिल की राह की,
क्या तू ही है मेरी मंजिल, इस तक़दीर को, कुछ पता नहीं ।।
बस तू ही दिल में समा हुकूमत करती है मुझपे,
क्या तुम ही होगी, मेरी तक़दीर, इस दिल को कुछ पता नहीं ।।

तेरा अहसास

कुछ ना चाहत मेरी, बस किसी के होने का अहसास चाहिए,
जब भी हो मन उदास तो किसी खास का हँसता चेहरा, जिसे देख कहूँ,
अब कुछ और ना चाहत मेरी,
जब भी डगमगाए कदम,
आ कर थामे हाथ,
बस दे इतना साथ, इससे ज्यादा कुछ ना चाहत मेरी,
अगर आँखों में हो आँसू, अपनों के हाथ का गाल पे हो स्पर्श,
इससे ज्यादा कुछ ना चाहिए,
जब भी बिखरू अपने दुखों से, आत्मविश्वास दे अपने में समेट ले, ऐसी दोस्ती की चादर चाहिए,
इससे ज्यादा कुछ न चाहिए,
कुछ ना चाहत मेरी, बस किसी के होने का अहसास चाहिए ।।

धर्म ध्वजा महोत्सव

–श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

काँटों में भी रास्ता स्वयं मिल जाता है,
जब चुनौतियों को साहस टक्कर देता है,
भयंकर तूफानों को चीरकर बुलंद जज्बे से,
ऐतिहासिक स्वर्ण अध्याय लिखा जाता है ।

दृढ़ संकल्प एक दिन सिद्ध हो जाता है,
जब आत्मविश्वास ही उत्तर बन जाता है,
विरोधाभासों को पछाड़ कर हौसले से,
आस्था प्रेम श्रद्धा का दीप जगमगाता है ।

हृदय गति सभागृह में एक-सी हो जाती है,
जब धड़कनें गीत प्रेम से श्रीराम के गाती है,
सम्पूर्ण विश्व में नाद गूँज उठता आल्हाद से
ये मौन तरंगें तन-मन को चैतन्य कर जाती है ।

कठिन तप पीढ़ियों का फलीभूत हो जाता है,
जब समूचे भारत का लक्ष्य एक हो जाता है,
समाप्त कर वर्षों के संघर्ष को श्रीविजय से
हर्षित हो धर्म ध्वजा महोत्सव मनाया जाता है ।

प्रार्थनाएँ स्वीकृत व साकार हो जाती है,
जब ईश्वरीय कृपा मूर्त रूप पा जाती हैं,
हृदय सागर में मचल उठती लहरें खुशी से
करोड़ों आँखे 'आनंद' में आँसू बहाती हैं ।

और तुम...

– श्री. मनीष उपाध्याय,
वाराणसी, उ.प्र.

सब कुछ नहीं कहा जा सकता है !
कुछ बातें अधूरी रहती हैं,
कुछ अनकही रह जाती हैं ।
हमें बारिशें नहीं पसंद हैं, तुम्हें तो पता है न !
फिर भी आज हम दो दफ़े भीग गये ।
खिड़की से हल्की फुहारें अभी भी भीतर आ रही हैं ।
तुम्हारी हमसे नज़र हटती है और हम कितनी लापरवाह हो जाते हैं ... नहीं !
कुछ हैं भीतर, जो तुमसे कह देना था, बहुत पहले ही ।
हमने कोशिश की, मगर न कह सके ।
नहीं कहा जा सकता है, वह एहसास जो प्यार से भी परे हो ।
कैसे कहे कोई कि एक सपना है जिसे हुबहू बयां करने को हमारे
पास लफ्ज़ ही नहीं ।
तुम्हारा दूर होना बारिशों की याद दिलाता है ।
मन टीसता है, आँखें भींगती हैं ।
सोचते हैं कभी-कभी कि प्यार को पाना इतना कठिन क्यों है ?
यदि तुम हमसे मिल जाओगी तो संसार का कौन-सा नियम टूट जाएगा !
तुमसे कहने को पूरा जीवन है ।
तुमसे छिपाने को सिर्फ दुख ।
जो बातें अनकही हैं, उन्हें किसी रोज तुम पढ़ लेना हमारी आँखों में ।
जो अधूरी रह गयी, उन्हें पूरा कर देना...
हमारी अधूरी कविताओं की ही तरह ।

हरियाणा भूमि

– डॉ. केवलकृष्ण पाठक,
जींद, हरियाणा

सुनो कि हरियाणा भूमि सन्देश सुनाती है
जागो सोने का समय नहीं यह शंख बजती है
यह वह भूमि जहाँ श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता सुनाई
यह वह भूमि जहाँ सत्य की खातिर लड़ी गई थी लड़ाई
यह वह भूमि जहाँ दुर्योधन ने अपनी शान मिटाई
यह भूमि जहाँ श्रीकृष्ण ने द्रोपदी की थी लाज बचाई
अब वही भूमि हम सब को यह सन्देश सुनाती है
जागो सोने का अब समय नहीं यह शंख बजती है
इस भूमि के वीर देश की खातिर जान गंवाएँ
इस भूमि के कृषक खुशी से खेत में हल चलाएँ
इस भूमि के अधिकारी भी अपना फर्ज निभाएँ
इस भूमि के कर्मचारी सबको सुख-दीप दिखाएँ
अब वही भूमि हम सब को यह सन्देश सुनाती है
जागो सोने का अब समय नहीं यह शंख बजती है
इस भूमि का हर प्राणी शिक्षित और सुनागरिक हो
हिन्दी भाषा की वाणी ही हर इक प्राणी से मुखरित हो
खेती करके कृषक भूमि से अधिक अन्न उपजायें
व्यापारी और निर्धन जन आपस में मेल बढ़ाएँ
अब वही भूमि हम सब को यह सन्देश सुनाती है
जागो सोने का अब समय नहीं यह शंख बजती है

दिलों में प्यार भरो । सबसे प्यार करो ।

आदत

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

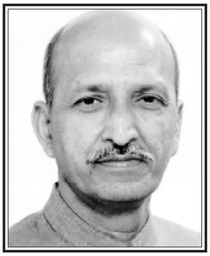

मेरी आवाज़ को सुनकर यदि आये न तुम कान्हा,
तो मैं रूठ जाऊँगी, यह बचपन की आदत है ।
अगर राधा बिन आये, तो इतना ध्यान रखना तुम,
मैं तुमको भी भुला दूँगी, यह बचपन की आदत है ।

अगर रुक्मणी के संग, सुभद्रा को भी ले आये,
करूँगी सब समर्पण मैं, यह बचपन की आदत है ।
करेंगे रास लीला हम, बंशी तेरी सुन सुन कर,
खुद को वार दूँ तुझ पर, यह बचपन की आदत है ।

अगर आये न तुम कान्हा, मेरी आवाज़ को सुनकर,
मैं खुद को ही मिटा दूँगी, मुझे अर्पण की आदत है ।
सुन साँवरे अर्ज़ मेरी, मैं तेरी ही दिवानी हूँ,
मैं समर्पित तेरे चरणों में, मुझे अर्पण की आदत है ।

सुन ले कान्हा तू इतना, मैं तेरी प्रेम दीवानी हूँ,
धरूँ मैं शीश चरणों में, मुझे समर्पण की आदत है ।
ब्रज की गलियों में डोलूँ, यमुना तट पर रम जाऊँ,
तेरी ख़ातिर बनूँ ग्वालिन, मुझे समर्पण की आदत है ।

गजल

– श्री. सपना चन्द्रा,
भागलपुर, बिहार

मन की कोई खिड़की खुली न रही
चेहरों पर पहलीवाली खुशी न रही

गिर गया आँखों से सबके पानी
आँखों में किसी के अब नमी न रही

खुश होकर मिले कैसे खुशी न रही
लबों पर किसी के वो हँसी न रही

भूल जाते हैं लोग हसीं रिश्ते पल में
दिल में पहले सी वह बंदगी न रही

अब्र ना आसमां में न हवाओं का डर
फिर क्यूँ दर पर शम्मा जली न रही

ख्याल आया कहाँ बिछड़ जाने का
हुआ ऐसा कुछ याद कभी न रही

मिट्टी में मिल जाना

गजल

– श्री पारस कुंज,
भागलपुर, बिहार

मिट्टी के हर पुतले को है मिट्टी में मिल जाना,
जो करना है कर ले होगा लौट के फिर न जाना !
शम्मा कब है बदली बदला करता है परवाना,
इन्सान का तो इस जीवन में काम है आना–जाना !
दुख सुख का ही नाम है जीवन इससे क्या घबराना,
जो भी किस्मत से मिल जाये प्रभु का गुण है गाना !
माया का ये जाल है ऐ दिल माया की ये दुनिया,
जो करता है जैसा वैसा कर है उसको है पाना !
अब तो वही होगा ऐ नादान ये कैसी मायूसी ?
करने से पहले न सोचा बाद में क्या पछताना !
मजदूरी मजदूर है करता आखिर क्यूँ है करता ?
उसकी माँग से पहले दे दो उसका मेहनताना !
'पारस' तुमको याद है रखना इस जीवन में औरों के,
हर मौके और हर मुश्किल में काम हमेशा आना !

बाल गीत

माँ गई बाजार

– श्री. टीकेश्वर
सिन्हा 'गब्दीवाला',
घोटिया–बालोद,
छत्तीसगढ़

माँ गई बाजार,
सब्जी खरीदने ।
सबसे पहले उसने खरीदे,
आलू और प्याज ।
फिर कानों में पड़ी उनकी,
बैंगन वाले की आवाज़ ।
गोभी बरबट्टी तोराई,
आई थीं बिकने ।
माँ गई बाजार... ।
अब वह मुड़ी उधर,
जिधर कुंदरू और करेला ।
लाल पका टमाटर रखा,
खड़ा हुआ था ठेला ।
हरी तीखी मिर्ची,
माँ को लगी दिखने ।
माँ गई बाजार... ।
सेम शिमला नवलगोल,
पालक और चवलाई ।
बैठी–बैठी धनिया मेथी,
मंद–मंद मुस्काई ।
झोले की सब्जियों को,
माँ अब लगी गिनने ।
माँ गई बाजार... ।

रचें मानवता के छंद !

– श्रीमती सुनीता मेश्राम 'गंगेश्वरी',
नैनपुर, म.प्र.

देश प्रेम मन में रखें, रचें मानवता के छंद !
दूर करें द्वेष सब, हटें जाति के बंध !
कश्मीर से तमिलनाडु तक, हो अपनेपन की वृष्टि !
असम से गुजरात तक, हो हमारी समदृष्टि !
मेल-मिलाप का करें, नूतन शुभारंभ !
हो सहयोग की भावना, मिटे सभी का दंभ !
अंग सभी हैं एक-से, एक-ही लोक-व्यवहार !
फिर क्यों करते भेद अब, मानवीयता करे पुकार !
भारत है मधुवन सुखद, खिलते सुमन सर्वत्र !
सृजन विविध भाषाओं का, करते हैं सब पत्र !
कल-कल करती हैं सरि, झरनों की सौगात !
भारत की प्रकृति मधुर, जिसके सुन्दर पात !
''गंगेश्वरी'' चाहती, गूँजे राष्ट्र का जयगान !
हो सभी में मैत्री, करें सभी का सम्मान !

कहते हैं यीशु

– श्री. नलिन खोईवाल, इंदौर,म.प्र.

तुमसे मिलने मैं आऊँगा,
चाँद-सितारे ले आऊँगा,
प्रेम दूँगा इतना तुम्हें मैं,
कि जीवन भर तुम्हें चाहूँगा ।
खुशियाँ ही खुशियाँ बाँटूँगा,
सबके दुख अब मैं हर लूँगा,
आस्था बना रखना मुझ पर,
यह यकीन टूटने न दूँगा ।
कभी किसी का दिल ना तोड़ो,
जो बीत गया उसको छोड़ो,
यीशु मसीह कहते हैं हमसे,
नेकी से कभी मुँह न मोड़ो ।
सच की राह चलना है तुम्हें,
अपने लिए जीना है तुम्हें,
कोई साथ दे या नहीं दे,
कर्म करते रहना है तुम्हें ।
दुखियों के दुख हरना तुमको,
कांटों के पथ चलना तुमको,
चाहे जो आ जाए मुश्किल,
हँसकर ही हल करना तुमको ।

SHABARI SIKSHA SANSTHAN
Shabari Palace, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.
& 0427-4265414 0427-4552100
Visit us @ https://shabari.in

A glance about Vani Vikas

Answers for the Frequently Asked Questions.....

Application forms for Vani Vikas Exams will be issued only to the members of Shabari Siksha Sansthan. Annual membership fee Rs.100/-

Why Vani Vikas exams are conducted ?

The name **Vani Vikas** itself explains us clearly that, Vani Vikas is to motivate the non Hindi speakers to speak in Hindi.

Who conduct the Vani Vikas exams ?

The Vani Vikas exams are conducted by **SHABARI SIKSHA SANSTHAN**.

Is Vani Vikas, written exam or oral exam (Vivavoce) ?

Vani Vikas exams motivate the students to speak Hindi, this is not a written exam.

What is the minimum age limit for Vani Vikas exam ?

One who has completed 8 years shall appear for the exam. Those who are participating in the Vani Vikas first level must attach the Xerox copy of the birth certificate.

What is the basic educational qualification for Vani Vikas exam ?

There is no basic educational qualification for Vani Vikas exam, self-interest is enough.

During which months that Vani Vikas exams are conducted ?

Vani Vikas exams are conducted in January, April, July and October.

How many levels are there in Vani Vikas exam ?

The Vani Vikas exam consists of EIGHT levels.

Is there any separate text book for Vani Vikas exam ?

Yes, Vani Vikas exam consist of seperate text books for all the EIGHT levels.

Is it must to take part in Vani Vikas exam level by level ?

Yes, you are suppose to do this exam level by level only. You can't do more than one level at the same time, in the same way you can't able to apply directly to second level or any other level. Those who apply for second level to eighth level must enter the 10 digit register number (passed previous exam number) in the exam application form.

Can we know about the exam centres for Vani Vikas ?

If you have 30 students to appear for the exam you will have your own centre. If the students number (count) is between 10 to 29 you have to pay rupees 500 as exam centre charge. **In your centre few more students from outside may join with you without any prior information from us**. The PAID exam centre charge will never be returned.

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

Does the Vani Vikas exam have the mark list and certificate ?

Within 30 days after the exam you will receive the mark list and within 60 days after the exam you will receive the Certificate. Results will be published in https://shabari.in.

Who will conduct the Vani Vikas exam ?

Experienced and efficient teachers will conduct the Vani Vikas exam.

Is there any sample questionnaire for Vani Vikas exam ?

Model question papers are at the end of the Vani Vikas text book.

Is Vani Vikas worth for students ?

By improving Hindi it is going to be definitely useful for the students and for their future carrier.

Details of the books :

Name of the Exam	Book
Vani Vikas Grade - 1	₹ 250.00
Vani Vikas Grade - 2	₹ 260.00
Vani Vikas Grade - 3	₹ 270.00
Vani Vikas Grade - 4	₹ 280.00

Name of the Exam	Book
Vani Vikas Grade - 5	₹ 290.00
Vani Vikas Grade - 6	₹ 300.00
Vani Vikas Grade - 7	₹ 310.00
Vani Vikas Grade - 8	₹ 320.00

Kindly pay the Vani Vikas books charges only through our web portal @ **https://shabari.in**

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

सिरप्पुली नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

एक राजा था दिल विशाल था वह महाराज था
एक व्रत लिया अन्नदान करने को ठान लिया
एक व्यक्ति का नहीं हजार व्यक्तियों का प्रबंध किया
एक दिन का नहीं एक मंडल का वह करने लगा
तिरुवाक्कुर मंदिर में हर रोज करने को ठान लिया
महाराजा है वह अब निकला महान दानी
सबको खाना खिलाकर अंत में वह अन्न ग्रहण करता
अनुदिन यह कम वह बड़े आनंद सहित कर पाता ।

हर रोज हजारों केले के पत्ते रखे जाते पवित्र प्यार सहित
हजारों लोग एक साथ बैठकर वहाँ अन्न दान ग्रहण करते
सैंतालीस दिन जारी रहा यह क्रम बिना किसी रुकावट
अब अड़तालीसवां दिन आ गया खुश थे महाराजा
रखे गए हजारों खेल के पत्ते पकाकर रखे गए स्वादिष्ट भोजन
महाराजा के लोग गिनने लगे अन्न दान शुरू करने के पहले
नौ सौ निन्यानवे लोग थे वहाँ एक आदमी के लिए जावे कहाँ ?
बार-बार गिने पर भी हजार लोग नहीं रहे उस जगह पर ।

उस भीड़ में से एक आदमी जोर से चिल्ला कर कहा
बिता दो सबको और परसों तुम खाद्य पदार्थ अभी
मिल जाएगा उसे आदमी भी जो करें संख्या को हज़ार
एक-एक करके सिर गिन कर भेजे थे लोगों को अंदर
जानेवाले थे नौ सौ निन्यानवे लोग खाना खाने वहाँ
खानेवाले ठहरे पूरे के पूरे एक हजार हाँ एक हज़ार
महादेव आए थे मानव बनकर सस्नेह वहाँ बैठकर खाए थे
स्वयं जनी के नाम से आज भी यहाँ पूजे जाते हैं ।

तिरुवाक्कूर में ब्राह्मण परिवार में जन्म पाए थे सिरप्पुली नायनार
बचपन से शिव की आराधना कर शिव महिमा गाते थे
हर हर शिव शिव महादेव समय बिताते थे
परमेश्वर को पाने की रीती जग को सिखा गए थे
शिव के प्रति प्रीति शिव का मार्ग सिखाती है
शिव में मिलकर शिव को ढूँढना जीत वही दिलाती है
निज कार्य जो कुछ भी हो उसे हमें समन करना है
चित्त में शिव को भरकर हमें शिव को ढूँढना है ।

शिव की आराधना से शिव के प्रति प्रीति बढ़ती है
शिव शिव हर हर कहने से जग में सब संभव बनता है
पंचाक्षरी का जाप वह महादेव को बहुत निकट लाता है
पाप हमारा दूर करके देव का मार्ग दिखाता है
भगवत भजन, भगवान का नाम पुण्य हमें भरता है
भगवान को सदा याद करके जीवन सुखमय बनता है
शिव की पूजा शिव की आराधना आत्मा को सुख देते हैं
शिव को पानी शिव में मिल जाने नाम उनके साथ देता है ।

सिरप्पुली नायनार सीख कर गए हमें भी शिवचरण अपना ने
भक्ति के साथ शिव भक्त की आराधना कर मुक्ति पाने
अनुदान करते रहे अंत तक वह शिव भक्त की सेवा करते रहे
खाना खिलाने ठहरने की व्यवस्था करवाते
शिव भक्तों की सेवा उसे हर रूप से कर पाते
भक्त की सेवा सेवा परमेश्वर की सच्ची सेवा है
परमेश्वर को पाने की यही सर्वोच्च तरीका है
शिव पद पाए अपनी सेवा से भाये सिरप्पुली नायनार ।

सिरप्पुली नाम इनका, सेवा करते सतत ।
भक्त की सेवा कर ये, पाए थे शिव चरण ।।

यह कैसा कर्तव्य... !

– श्री. संजय एम. तराणेकर,
इन्दौर, म.प्र.

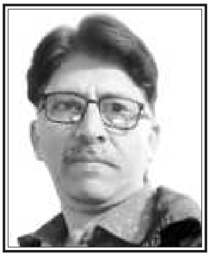

भाई यह कैसी रहीं 'माता–पिता' की माया,
घर में हुए दो मुख्यमंत्री बेटा पढ़ न पाया ।
क्यों ? नहीं समझ पाए ये शिक्षा का महत्व,
क्या ? 'क्रिकेट' में समाया था सम्पूर्ण सत्व ।

इन 'पालकों' ने यह कैसा निभाया कर्तव्य,
स्वघोषित मुख्यमंत्री होना यहीं भवितव्य ।
स्वयं अपने ही पास जब रखीं है लालटेन,
क्यों ? ना दी पढ़ने के लिए उसे कॉपी–पेन ।

पता नहीं कहाँ–कहाँ फैला था जंगल राज,
घुलना थे इनके कानों में नम्रतारूपी साज़ ।
तब बन पाते यहीं 'जनमानस' की आवाज,
दिलों पर करते राज मिलती सत्ता परवाज़ ।

कौन कहता हम किसी से प्यार नही करते

– श्री. राम कृष्ण रस्तोगी,
गुरुग्राम, हरियाणा

कौन कहता है सीने मैं अलमारी नही होती,
सुख दुःख की फाइलें इसी में ही भरी होती ।
ज़ब फुर्सत मिले कभी इन्हें ध्यान से पढना,
इसमें तुम्हारे जीवन की कहानी लिखी होती ।।

कौन कहता है हम किसी से भी प्यार नही करते,
करते हैं मगर किसी से इसका जिक्र नहीं करते ।
पता लग जाता है जब लोगों को हमारे प्यार का,
दुनिया क्या कहेगी इसका हम फिक्र नहीं करते ।।

वो एक शख्स बेंवजह ही वजह बन गया...!!

– श्री. सुनील चन्द्र, नैनीताल, उत्तराखण्ड

वो शख्स जो खुदा के अनमोल उपहार के रूप में मिला,
आज उससे यह नाता अटूट, अमिट, अनमोल बन गया ।।
जिसके दूर होने पर भी मन की दूरी कम न हुई,
न जाने कैसे यह अपनापन परम दृढ़ हो गया ।।
जिंदगी जीने की किसी खास शर्त पर नहीं,
बिना किसी शर्त के ही वह जिंदगी बन गया ।।
वह सफ़र जिसकी शुरुआत में रंगों की कमी थी,
आगे वही सफर धीरे-धीरे बेहद रंगीन बन गया ।।
गैर मौजूदगी में भी होती है जिसकी पल-पल मौजूदगी,
न जाने कैसे वह इस जीवन का एक अहम हिस्सा बन गया ।।
जीवन के सफ़र में आशा पिरोने वाला वह मतवाला,
जीवन जीने का एक नया सलीका, नई वजह दे गया ।।
वो एक शख्स बेवजह ही वजह बन गया...!!

युद्ध और शांति

– श्री. देविका. ए,
कोयंबत्तूर, तमिलनाडु

युद्ध का नाम सुनते ही मन घबराता है,
भय और आशंका से जग सिहर उठता है ।
किसी का विजय, किसी का पराजय,
यही तो कथा,
पर अंत में हारती सदा शांति की व्यथा ।
राम-रावण का समर हुआ,
सीता के अपहरण का परिणाम हुआ ।
अधर्म मिटाने उठा था धर्म का अस्त्र,
किन्तु शांति हुई फिर परास्त, हुई व्यस्त ।
पांडव-कौरवों का महा संग्राम,
छल, कपट, और नीति का काम ।
धर्म की स्थापना का था यह प्रयत्न,
पर हार गई शांति, हुआ मन शून्य ।
राज्य-राज्य, देश-देश का द्वंद्व,
हर जगह बढ़ा दुख और क्रंदन ।
अपनी रक्षा में सब लगे प्रबल,
पर शांति ही हार गई, यह सत्य अचल ।
अब मानव के आगे यही सवाल है,
कब खतम होगा यह युद्ध का हाल ।
जीत नहीं अब ढूँढो करुणा और सौहार्द,
युद्ध रुकेगा, तभी मिलेगी शांति को जीत ।

गजल

– श्री. श्रीकृष्ण सैनी, अम्बाला, हरियाण

दुबके हैं भुजंग बिलों में, और भेड़ों के दंश हुए हैं,
निरीह मामा हैं दबे–दबे से और भांजे कंस हुए हैं ।
अगर पनपता रहा असत्य इसी गति से,
खबर मिलेगी इक दिन के नपुंसकों के भी वंश हुए हैं ।
देख–देख हालात आज के, कहेगी आनेवाली पीढ़ी,
जंगल में शेरों के रहते, भेड़िए भी सरपंच हुए हैं ।
जिसे भी देखो, मार काट की बातें करता है,
हर जिह्वा और हर कण्ठ में, अब तो मानो डंक हुए हैं ।

गजल

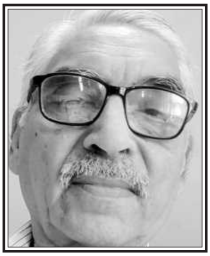

डाल ले आदत थोड़ी सी ग़म खाने की,
अपनों से उम्मीद न रख कुछ पाने की ।
अपने हाथों अपना बदन दबा लेना,
औलादें हैं खुद बीमार जमाने की ।
याद करोगे जब भी धोखा खाओगे,
कितनी सच्ची बातें थी दीवाने की ।
पागल तुझको ही कर देंगे लोग यहाँ,
कोशिश न कर इनको कुछ समझाने की ।

चाह

आनेवाला नया साल हर घर में, हर मन में हिन्दी को स्थान देने के साथ–साथ हर घर में शांति और समृद्धि को भी स्थान दे । इस दुनिया में हर कहीं शांति और बढ़ोतरी को स्थान मिले । भाईचारे की भावना से भरकर आदमी एक दूसरे का आदर तथा सम्मान करें । सद्भावना और सच्चा प्यार हर व्यक्ति में भरे रहे । लोग सिर्फ अपने बारे में ही नहीं सबके बारे में सोच कर सबके साथ सबका विकास पर ध्यान दें ।

ड्यूटी लगती नहीं सगी

– डॉ. अवधेश कुमार अवध,
जयंतिया हिल्स, मेघालय

तुम भी भागो, मैं भी भागूँ,
भागो, भागम–भाग लगी ।
सबको ही अधिकार चाहिए,
ड्यूटी लगती नहीं सगी ।।

पहले लूटो अपने दम पर,
फिर कानूनन माँग रखो ।
कर्मवीर के श्रम–प्रतिफल को,
आरक्षित बन खूब चखो ।।

खाते–खाते उनके पूर्वज,
का जी भर अपमान करो ।
अगर किसी ने चूँ भी बोला,
छुआछूत संधान करो ।।

भारत माता भेदभाव लख,
रहती है दिन–रात जगी ।
सबको ही अधिकार चाहिए,
ड्यूटी लगती नहीं सगी ।।

कहीं जातिवाद का जलवा,
क्षेत्रवाद ललकार रहा ।
भाषावाद उठा अपने फन,
हिन्दी को दुत्कार रहा ।।

बहु भाषा के बीच सेतु बन,
हिन्दी सबको जोड़ रही ।
क्षेत्रवाद के पोषक कहते,
'हिन्दी सबको तोड़ रही ।।'

राजनीति के नागपाश में,
भारत माँ संग हुई ठगी ।
सबको ही अधिकार चाहिए,
ड्यूटी लगती नहीं सगी ।।

रोटी भात नमक से बढ़कर,
भूखे जन की चाह बता ?
सर पर छप्पर, वस्त्र देह पर,
क्या है इसमें बता सकता ??

पर सेवा है पुण्य सुनिश्चित,
पर पीड़ा है पाप महा ।
कर्मों का परिणाम मिलेगा,
सब धर्मों ने यही कहा ।।

प्रेम भक्ति कर्तव्य समझकर,
प्रेम दिवानी सदा पगी ।
सबको ही अधिकार चाहिए,
ड्यूटी लगती नहीं सगी ।।

विज्ञान : ज्ञान का वरदान

– श्री. रुपेश कुमार,
चैनपुर, बिहार

विज्ञान सिखाए देखो प्यारे,
कैसे चलती दुनिया हमारे ।
हर प्रश्न में खोज छिपी है,
हर उत्तर में रोशनी है ।

विज्ञान, ज्ञान का वरदान,
हर बच्चे के दिल में तेरा सम्मान !

भौतिक, बल और गति की बात,
भौतिक जी बोले गेंद उछालो,
कैसे गिरे, ये ज़रा संभालो ।
बल लगाओ, वेग बढ़ाओ,
हर गति में मैं नजर आऊँ ।

प्रकाश, ध्वनि, बिजली की चाल,
सबमें मेरा अद्भुत हाल ।
धरती घूमे, चाँद दिखे,
नियमों से जग सब जिए ।

विज्ञान, ज्ञान का वरदान,
हर बच्चे के दिल में तेरा सम्मान !

रसायन विज्ञान रंगों का जादू,
रसायन बोले मैं हूँ जादू,
बदल दूँ रंग, दिखाऊँ साधु !
अम्ल–क्षार में खेल निराला,
अणु–मिलन से बने उजाला ।

पानी, हवा, लवण, धातु,
सब मेरे हैं प्यारे साथी ।
छोटी शीशी में बड़ा जहान,
रसायन से चलता विज्ञान ।

विज्ञान, ज्ञान का वरदान,
हर बच्चे के दिल में तेरा सम्मान !

जीव विज्ञान, जीवन की कहानी
जीव विज्ञान मुस्काकर बोले,
जीवन के राज़ मैं सब खोलूँ ।
कोशिका से शुरू सफ़र,
बन गया मानव, बड़ा सुंदर ।

पौधे, जानवर, सब हैं भाई,
जीवन में सबकी भूमिका आई ।
साँसों में बहता जीवन रस,
प्रकृति में है मेरा बस ।

विज्ञान, ज्ञान का वरदान,
हर बच्चे के दिल में तेरा सम्मान !

गणित, गिनती का राजा
गणित जी बोले मैं तो न्यारा,
गिनती में छिपा जग सारा ।

एक, दो, तीन, चलो गिनो,
जोड़ो, घटाओ, मुझसे सिखो ।

रेखाएँ, कोण, आकृतियाँ प्यारी,
संख्याएँ मेरी सबसे भारी ।
मुझसे ही सब मापन सही,
बिना गणित कुछ समझे नहीं ।

विज्ञान, ज्ञान का वरदान,
हर बच्चे के दिल में तेरा सम्मान !

अनुप्रयुक्त विज्ञान, काम का साथी
कहता अनुप्रयुक्त विज्ञान,
मैं बनाऊँ जीवन आसान ।
इंजीनियर, डॉक्टर, किसान,
सब मेरे ही महान जवान ।

कम्प्यूटर बोले मैं भी साथी,
ज्ञान चलाऊँ एक कुँजी हाथी !
तकनीक से बदला जहान,
बढ़ा हमारा विज्ञान महान !

विज्ञान, ज्ञान का वरदान,
हर बच्चे के दिल में तेरा सम्मान !

समापन, विज्ञान का संदेश
सबने मिलकर गाया गीत,
ज्ञान बने सबका मीत !
भौतिक, जीव, रसायन, गणित,
सबमें छिपा है जीवन हित ।

सोचो, पूछो, खोजो सदा,
यही है विज्ञान की अदा ।
सत्य की राह, उजाला ज्ञान,
विज्ञान है मानवता का मान ।

विज्ञान, जग का गान,
जीवन में इसका हर अभियान ।
ज्ञान की ज्योति जलाओ साथ,
विज्ञान है सच्चाई का पथ !

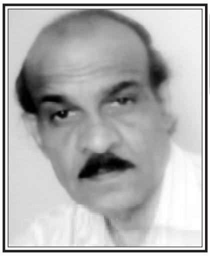

ग़ज़ल

– श्री. नवीन
माथुर पंचोली,
अमझेरा, धार, म.प्र.

बाहर है हामी–मानी ।
अंदर से आना–कानी ।
पहचानी है आँखें पर,
नज़रें लगती अनजानी ।
जीत जुबानी बातों की,
जतलाती है हैरानी ।
भटकायेगी थोड़ा तो,
राह चले जब बेगानी ।
भूल बड़ी बन जाती है,
इक छोटी सी नादानी ।
जिनका है आना अक़्सर,
उनकी कैसी अगवानी ।
कहकर सारी दिखलादी,
जो थी उनको समझानी ।

चलना जरूरी है...

– डॉ. पी.आर. वासुदेवन शेष,
चेन्नै, तमिलनाडु

है अँधेरी रात बहुत, पर चलना जरूरी है
थकना नहीं, थमना नहीं, बढ़ना जरूरी है
पथ पर चाहे कितने काँटें चुभें
दर्द को सहना भी उतना जरूरी है ।।

फल कितना भी कड़वा हो
काटकर उसे खाना भी जरूरी है
पेड पर लगे हों कितने भी फल–फूल
पतझड़ में उनका गिरना जरूरी है ।।

भूख, प्यास चाहे हो जितनी
उपवास, रोज़ा रखना उतना ही जरूरी है
देश, जनहित की सुरक्षा की खातिर
घर में बंद रहना भी जरूरी है ।।

राष्ट्रहित के प्रहरियों पर
पुष्प अर्पित करना भी जरूरी है
पीड़ितों, प्रवासियों, असहायों की खातिर
राहत कोष में दान देना भी जरूरी है ।।

देश में सद्भावना, सौहार्द के लिए
सबको मिलजुल कर रहना भी जरूरी है
संकल्प, संयम, नि:स्वार्थ भाव से
हर नागरिक को कर्तव्य भी जरूरी है ।।

देश को आत्मनिर्भर, सशक्त, जागरूक
कौमी एकता को बनाये रखना जरूरी है ।।

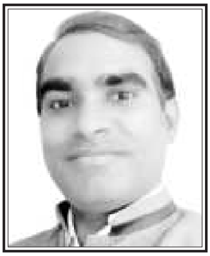

अग्नि पथ

– श्री. गोपेंद्र कु सिंहा गौतम,
औरंगाबाद, बिहार

जिन लोगों के लिए लड़ रहा था
उनसे धोखा पाकर सँभल रहा हूँ !
कल अग्नि पथ पर चल रहा था
आज फिर अग्नि पथ पर चल हूँ !!

कभी डरा नहीं जुल्मी जमाने से
आज भी किसी से नहीं डर रहा हूँ !
हम रेजांगला शहीदों के संतान हैं
उनके बताए मार्ग पर चल रहा हूँ !!

हमने गैरों से मिलना छोड़ा नहीं
बस खुद से मिलना सीख रहा हूँ !
दिल थोड़ा जो कमजोर था मेरा
उसे फौलादी बनाना सीख रहा हूँ !!

डगर हमारी चाहे विकट हो जितनी
मंजिल को लक्ष्य करके चल रहा हूँ !
भले उनकी फितरत है धोखे की
मैं मोहब्बत का फूल लगाते चल रहा हूँ।

जिन लोगों के लिए लड़ रहा था
उनसे धोखा पाकर सँभल रहा हूँ !
कल अग्नि पथ पर चल रहा था
आज फिर अग्नि पथ पर चल हूँ !!

एक गीत

अपनापन

– श्री. गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण',
इन्दौर, म.प्र.

कहाँ किसी का प्रणय निवेदन
कहाँ तुम्हारी मधु चितवन
कहाँ किसी का स्वत्व प्रदर्शन
कहाँ तुम्हारा अपनापन

बेशक हो वह युग की रम्भा
या मधुपुर की लाल परी
सुन्दरता की रूपराशि या
हो ऋतुपति की रति उतरी

देख तुम्हारा नैसर्गिक गुण
मैंने सबको ठुकराया
वही आज आभूषण जैसा
खिल उठता है भोलापन

कहीं रूप का नशा चढ़ा था
उतरी कहीं जवानी थी
कहीं रूप ही रँगा हुआ तो
बिगड़ी कहीं कहानी थी

कुछ ने स्वार्थ साधकर मुझपर
तीखे तीर चलाए पर
हरा न पाए निर्मल मन को हार गया पर दूषित तन

प्रिये ! तुम्हारे सिवा न भायी
फूलों सी शहजादी भी
इसीलिए सौंपी है तुमको
जीवन की आजादी भी

जिनके सम्मोहन का जादू
उच्चाटन पर भारी था
उनसे भारी पड़ा तुम्हारा
बिना बनावट बाँकापन

जब से यह संकल्प लिया था
बाँह पकड़ कर चलने का
कोई भी विश्वास न टूटा
अनुबन्धों को छलने का

आती हैं मन की उड़ान में
कई तितलियाँ अपनी–सी
लेकिन मिलता नहीं किसी में
तुम सा अपना अपनापन

मनहरण घनाक्षरी

(छन्द युग आएगा)

– डॉ. पवन कुमार पाण्डे,
निजामाबाद, तेलंगाना

समय के साथ–साथ, सब ही बदलता है,
बदलें हैं आप भी तो, बहाने न कीजिए ।
समय न कटता था, बात बिन किए कभी,
चाह वैसी रही नहीं, मान यह लीजिए ।
समय न बचता है, पास मेरे कहकर,
समय को आप अब, दोष मत दीजिए ।
भाव के प्रभाव से ही, पत्थर पसीजते हैं,
भावहीन आप अब, व्यर्थ न पसीजिए ।।

रचना

जज़्बात का समंदर

– एडवोकेट डी.के.कनौजिया, दिल्ली

इनसान के दिल में
जज़्बात का एक बड़ा समंदर रहता है,
कभी प्यार की लहरें उठती हैं,
कभी दर्द धीरे-धीरे किनारों को काटता है।
कभी उम्मीद की छोटी-सी नाव
दूर तक तैर जाती है,
तो कभी टूटी हुई खामोशी
अपना वजन दिल पर रख देती है।
कभी किसी की मुस्कान
पूरी दुनिया हल्की कर देती है,
तो कभी एक शब्द
अंदर तक चुभ जाता है।
ये दिल भी अजीब है
कभी बच्चों की तरह खिलखिलाता है,
कभी बूढ़े की तरह थककर बैठ जाता है।
पर सच यही है
हम सबके भीतर
एक गहरा समंदर है,
जो हर रोज़
प्यार, दर्द, उम्मीद
और खामोशी की
नई-नई लहरें पैदा करता रहता है।
और इनसान
बस उन लहरों पर
खुद को संभालते हुए
जीता चला जाता है।

यह जीत हैं, प्रचंड हैं

– श्री. राकेश कुमार, फतेहपुर, बिहार

विपक्ष रंड-भंड है,
मक्कार जो हुए थे एक,
कह रहे थे खुद को नेक,
मिला ये उनको दंड है,
यह जीत है, प्रचंड है,
SIR पर सर वे धुनते रहे,
सच से आँखें मूंदते रहे,
वोट बैंक का था घमंड,
ध्वस्त हुआ MY का संग,
वोटों का न हुआ प्रबंध है,
हार से वे दंग हैं,
यह जीत है, प्रचंड है,
कट्टों का जिन्हें घमंड है,
गाली का लिया संग है,
ये उसी का दंड है,
ये जीत है, प्रचंड है,
नौकरी का दिया, छलिया वादा,
घुसखोरी का था बड़ा इरादा,
दो मूर्खों की जोड़ी संग है,
ये जनता का दिया दंड है,
ये जीत है प्रचंड है,
ये जीत की सुगंध है,
NDA का सौगंध है,
देशप्रेम अखंड है,
सुशासन का प्रबंध है,

सही वक्त का इंतजार

– श्री. सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह,
मधुबनी, बिहार

सही वक्त का इंतजार करो,
किसी से भी कभी नहीं डरो ।
हार नहीं मानो इस जीवन में,
आखिरी सांस तक जंग लड़ो ।
सही वक्त का...

यह बात मेरा मन मुझे कहता
पुरानी तस्वीर में भी रंग भरो ।
इस उदास जीवन को सजाओ,
पीछे न देखो, सदा आगे बढ़ो ।
सही वक्त का...

दुनिया में सब कुछ संभव है,
सभी से अच्छा व्यवहार करो ।
मौजूदा वक्त तेरे खिलाफ है,
इस सच्चाई को स्वीकार करो ।
सही वक्त का...

वक्त किसी का गुलाम नहीं है,
अच्छाइयों से सदा प्यार करो ।
सबका वक्त बदलता एक दिन,
कभी भी इसे मत इंकार करो ।
सही वक्त का...

दूर भाग जाएगा सारा अंधेरा,
उजाले को नहीं अंधकार करो ।
हंसता नाचता आएगा सबेरा ।
सूर्य देव को नमस्कार करो ।
सही वक्त का...

कभी किसी के भरोसे नहीं रहो,
अपना व्यक्तित्व विस्तार करो ।
इस जीवन नैया का खेवैया बनो,
शान से मझधार को पार करो ।
सही वक्त का...

शिव शक्ति

– श्री. प्रज्ञा जायसवाल,
सोहागपुर, म.प्र.

शाश्वत साक्षात,
सुन्दर स्वरूपम,
जटा गंगा त्रि नेत्रम,
भस्म अंग धारी ।
गले सर्प माला,
शशि भाल विराजित,
कर में त्रिशूल सोहे,
है भोळे भंडारी ।
पार्वती अर्धांगिनी,
अर्द्धनारीश्वर अवतारी,
तीनों लोकों के स्वामी,
चंद्रमौलि बाघामबर धारी ।
शिव शक्ति है,
है शक्ति शाली,
सच्चिदानंद रूप,
नमस्ते शि वो हम ।

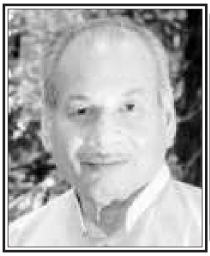

प्रेम, मान-सम्मान, यश अर्जन होते हैं

– डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र
'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

कोई क्या सोचता है हमारे बारे
में हम क्यों उसकी परवाह करें,
राय मशविरा सब देते हैं पर क्या
वह सब वास्तव में सच होते हैं !

वैसे सोच विचार किसी विषय
पर भी अति मूल्यवान होता है,
लेकिन आवश्यकता से ज़्यादा उसे
तूल देना सदा विषम हो जाता है ।

हमारी सोच और हमारे वक्तव्य
भले ही मान्य नहीं किए जाते हैं,
लेकिन क़र्म और कृतित्व हमारे
सदा व्यक्तिव का यथार्थ बताते हैं ।

प्रेम, अनुग्रह और कृतज्ञता पूर्वक
हर हालात में ख़ुश रहना जीवन में,
आध्यात्मिक अनुभव बतलाता है,
हर दिन एवं हर पल का जीवन में ।

प्रेम, यश, मान–सम्मान, अच्छे संबंध
सत्क़र्म और धर्म फल अर्जित होते हैं,
अर्जन की कोई परिभाषा नहीं होती,
पर जीवन के यह अर्जित फल होते हैं ।

मान सम्मान, मित्र, रिश्ते व अनुभव
की छाप क़र्म–धर्म पर भी पड़ती है,
आदित्य अच्छाइयाँ अदृष्य होती हैं,
पर इनकी छाप औरों पर पड़ती ही है ।

जय माँ शारदे

– श्री. राम लखन
शर्मा अंकित,
ग्वालियर, म.प्र.

मित्र दुख से न जिसे संताप ।
दर्शनों से उसके है पाप ।।
जगत में जो हैं सच्चे मित्र ।
विमल रखते वे आप चरित्र ।।

जानते वे निज पथ का मर्म ।
मानते बड़ा मित्र का धर्म ।।
दुष्ट आचरणों से हर बार ।
बचा कर करते हैं उपकार ।।

बड़ा खुद का दुख छोटा जान ।
मित्र का दुख पर्वत सम मान ।।
किया करते हैं जो व्यवहार ।
वही इस जग में सच्चे यार ।।

यही है मित्र धर्म का सार ।
मगर इससे भटका संसार ।।
आज करते मुँह देखी बात ।
किया करते मित्रों से घात ।।

मित्र हैं आज नाम के मात्र ।
नहीं यह मित्र धर्म के पात्र ।।
आज मित्रों के उल्टे तौर ।
मित्र बाहर अंदर से और ।।

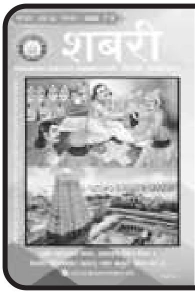

पाठकों के पत्र ...

आदरणीय संपादक महोदय,

आप पूरे भारत से हिन्दी के लेख कवितायें संकलित कर एक हिन्दी की शबरी शिक्षा समाचार पत्रिका में समाहित कर पूरे भारत में निशुल्क उपलब्ध करा रहे है । ये काम बिना समर्पण के संभव नहीं है । आपके इस समर्पण को नमन करता हूँ ।

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज,
लखनऊ, उ.प्र.

समादरणीय ! मैंने शबरी शीर्षक पत्रिका का अवलोकन किया । मुझे आपका संपादन बहुत अच्छा लगा । प्रसन्नता है कि साहित्य-सेवा पर आपका अत्यधिक ध्यान है । कवि-बंधु/साहित्यकार ज्ञानवर्धक साहित्य-सृजन कर रहे हैं, लेकिन कुछ बंधु ऐसे भी हैं जो भाषा-शैली एवं काव्य की विधाओं के नियमों से वंचित रहकर यथार्थ सृजन नहीं कर पा रहे हैं ।

यदि आप इसपर कुछ ध्यान देंगे तो पत्रिका के पाठकों एवं साहित्यकारों को अत्यधिक प्रसन्नता होगी । सादर !!

– डॉ. शेषपालसिंह 'शेष', आगरा, उ.प्र.

बहुत सुंदर अंक !

संपादकीय टीम को संयोजन के लिए

– श्री. सूबेदार रावत गर्ग उण्डू 'राज',
बाड़मेर, राजस्थान

हार्दिक बधाई और धन्यवाद, एक अच्छा रुचिकर अंक प्रकाशित करने और मेरे तक पहुँचाने हेतु ।

– श्री. शैली, लखनऊ, उ.प्र.

बहुत बहुत धन्यवाद प्रिय एम. श्रीधर जी । शबरी शिक्षा समाचार का नवम्बर अंक प्राप्त हुआ । मेरी दो कविताएँ 'मानव जीवन सर्वोत्तम' और 'बचपन' को प्रकाशित करने के लिये हार्दिक आभार । पत्रिका के माध्यम से देश-विदेश में हिन्दी का प्रचार प्रसार सुदूर दक्षिण भारत से आप निरंतर कर रहे हैं आपको हार्दिक बधाई एवं अनंत शुभकामनाएँ ।

– डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य',
लखनऊ, उ.प्र.

आपके सकारात्मक प्रयास सदैव प्रशंसनीय हैं । राष्ट्र को भाषायी एकता में जोड़ती शबरी समाचार सामग्री की दृष्टि से भी सर्वोत्तम पत्रिका है ।

हमारी रचना को स्थान देने के लिये आपका धन्यवाद ।

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

उत्तम हिन्दी सेवा को समर्पित सुंदर पत्रिका, इस बार के अंक में समूह से गुंजन साहब की भी रचना है ।

– श्री. ममता तिवारी 'ममता',
जाँजगीर, छत्तीसगढ़

शबरी सिर्फ पुस्तक नहीं,
ये रामकृपा की धार है ।
ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक
रचनाओं का सुन्दर सार है ।।

– श्री. रीता सिंह, बेंगलुरु, कर्नाटक

नवांकुर

पुरस्कार

– लक्षिता श्रीधर,
बारहवीं कक्षा, एमराल्ड वैली पब्लिक स्कूल, सेलम, तमिलनाडु

आज मैं अपनी खुशी आप सबके साथ बाँटना चाहती हूँ। मैंने हमेशा सभी से सुना है कि पुरस्कार मिलने से बेहद खुशी मिलती है, और वह पुरस्कार हमेशा उस इंसान को प्रेरणा देकर उसे जिंदगी में प्रयास करते रहने की ऊर्जा देता है।

मुझे एक पुरस्कार मिलनेवाला है !

बचपन में मैंने कभी हिन्दी पढ़ने में कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई। लेकिन जैसे-जैसे मैं बड़ी हुई, मुझे उस भाषा का महत्व समझ में आने लगा। उसके बाद मैंने पूरे मन से हिन्दी पढ़ी और उसमें गहरी दिलचस्पी दिखाने लगी।

यह पुरस्कार मुझे इसी तरह आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित कर रहा है। इसलिए, पुरस्कार न केवल खुशी लाते हैं, बल्कि हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देते हैं।

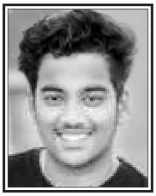

सपने

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै,
तमिलनाडु

सपने छोटी तस्वीरें हैं,
जो मन में उजियारे लाएँ,
दिखलाएँ क्या सम्भव है सब,
अगर हम साहस अपनाएँ।

कुछ सपने पर्वत जैसे,
ऊँचे, कठिन, थकानेवाले
पर कदम-कदम हम बढ़ते,
धैर्य के शिखर पर जाएँ।

सपने देते हिम्मत हमको
कुछ भी नया आज़माएँ,
अपने मन पर विश्वास करें,
जो चाहें वह कर पाएँ।

सपनों को थामे रखना,
यूँ ही न उन्हें मिटाएँ-
हर बड़ी सफलता का बीज
सपनों में ही उग जाए।

नवांकुर-रचनाएँ आमंत्रित

रचयिता की आयु 21 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए। खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करें। रचना 50 से 150 शब्दों में होनी चाहिए हैं।

कृपया आयु प्रमाण-पत्र की प्रति साथ भेजें।

मेहनत

– शंकर वेंकटेश्वरन,
श्री कृष्णा आर्ट्स एंड साइंस
कॉलेज़, कोवै, तमिलनाडु

एक दिन एक माली को अपने बगीचे में एक तितली का अंडा मिला। उस अंडे में एक छोटा-सा छेद था। अंदर से तितली उस छोटे छेद के माध्यम से बाहर आने के लिए बहुत मेहनत कर रही थी। माली ने इन सब पर ध्यान दिया और वह एक घंटे तक इंतजार करता रहा। जब कुछ नहीं हुआ, तो उस माली ने अंडे को काट दिया। माली ने सोचा था कि यह काम तितली के लिए बाहर आना बहुत आसान हो जाएगा, और वैसा ही हुआ। फिर वह तितली बाहर तो आ गई, लेकिन खुद उड़ नहीं पाई। वह धीरे-धीरे सिर्फ टहल रही थी और फुदक रही थी। कुछ देर बाद वह तितली मर गई। आस-पास कई सारी तितलियों को देखकर उस माली को अपने काम पर बहुत पछतावा हुआ, और उसे खुद पर बुरा लगा। उस माली को बाद में यह समझ में आया कि, जब एक तितली अपनी मेहनत से उस छोटे छेद को बड़ा करके बाहर आती है, तभी वह अपने पंखों से अच्छी तरह उड़ सकती है। इस कहानी के द्वारा हम एक बात समझ सकते हैं कि, हम इंसानों की जिंदगी भी एक तितली की जिंदगी की तरह है। हर दिन हम कई मुश्किलों को सँभालकर उनसे पार पाते हैं। वे शायद कितनी भी बड़ी या कितनी भी मुश्किल हों, लेकिन हमें इन सबको खुद से संभालना चाहिए। जिंदगी में मेहनत के बिना कुछ भी नहीं मिलेगा और जो भी मेहनत के बिना मिलेगा, वह हमेशा हमारे साथ नहीं रहेगा।

साहित्यकारों से निवेदन है कि वे स्वरचित, अप्रकाशित रचनाएँ मात्र भेजें। अन्य पत्रिकाओं व सोशियल मीडिया या अन्य जगहों पर प्रकाशित रचनाएँ कभी नहीं भेजें।

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितौ, अभिरुचितौ, अनूदितौ

प्रयत्ने संकोचं मास्तु

एकः राजा स्पर्धायाः घोषणां कृतवान् । भवता हस्तेन दुर्गद्वारं उद्घाटितव्यम् । यदि भवतः विजयं प्राप्नुवन्ति तर्हि देशस्य एकः भागः दानं भविष्यति । यदि हारसि तर्हि भवत हस्तौ छिन्नौ भविष्यत । यतः जनाः भीताः आसन्, तस्मात् स्पर्धायां कोऽपि भागं न गृहीतवान् । केवलं एकः युवकः स्पर्धायां भागं ग्रहीतुं अग्रे आगतः । अन्ये तं ''पृष्टवन्तः यदि स्पर्धायां पराजितः चेत् हस्तौ छिन्नौ भविष्यतः । भवतः भविष्यं किं भविष्यति ?'' इति । ''महोदय, यदि अहं विजयं प्राप्नोमि तर्हि राजा भविष्यामि । यदि अहं हारिष्यामि तर्हि केवलं मम हस्तौ नष्टौ भविष्यतः, मम जीवनं नष्टं न भविष्यति'' इति युवकः प्रत्यवदत् । अनंतरम् सः दुर्ग द्वारं धक्कितवान् । अहो किं चमत्कारः ! तक्षणादेव द्वारं उद्घाटितम् । अर्गला हि न लग्रा आसीत् । उद्घाटितमेव आसीत् कवाटम् ।

पराजयः भविष्यति, किमपि नष्टं भविष्यति इति भीत्यै अस्माकं बहवः किमपि प्रयत्नं विना एवमेव व्यवहारं कुर्वन्ति ।

परिसर शिक्षा

अहं ईश्वरं पृष्टवान्, ''मम जीवनं कथं वाहयितव्यम् ? ईश्वरः मां अवदत् ''यत् भवतः कक्षं पश्यतु'' । अहम च कक्षं अपश्यत् । मम कक्षः सर्वस्य उत्तरं दत्तवान् । छादः अवदत्, ''भवतः विचारान् उच्चैः स्थापयतु इति । पतङ्गः अवदत्, मम इव भवान् शीतलो भवतु'' इति । ''समयस्य आदरं कुरु'' इति घटी अवदत् । दिनदर्शिकया उक्तं यत्, ''मम इव प्रतिदिनं स्वस्य नवीनीकरणं कुरु'' इति । ''भविष्यस्य कृते धनं रक्षतु'' इति धनस्यूतेन उक्तम् । दर्पणः अवदत्, ''स्वमेव पश्यतु'' इति । दीप उवाच परेषां जीवने ज्योतिं प्रज्वालयतु । ''विशाल हृदयवान् भवतु'' इति अवदत् । भूतलम् अवदत्, ''सदा विनयी भवतु'' इति । सोपानम् अवदत्, ''प्रत्येकं पदं सावधानतया स्थापयतु'' इति ।

यदि वयं जीवने एतस्य अनुसरणं कुर्मः तर्हि उच्चतमं स्तरं प्राप्तुं शक्नुमः ।

தமிழமுது – நுண்மை நுகரேல்

– எம். ஸ்ரீதர்,
நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

தமிழரின் வாழ்வும் வளமும் ஒன்றுக்கொன்று தொடர்புடையவை. செவிக்குணவில்லாத போது சிறிது வயிற்றுக்கும் ஈயப்படும் என வாழ்வியல் தத்துவங்களை மிக அழகாக நம்முடைய வாழ்க்கையில் நடத்திக் காட்டியவர்கள் நம் முன்னோர்கள். உணவே மருந்து என நம்முடைய உணவுப் பழக்கங்களை மிக அழகாகவும் நேர்த்தியாகவும் உடலுக்கு வலிமை தரக்கூடியதாகவும் பயன்பெறக்கூடியதாகவும் ஏற்படுத்திக் கொடுத்தவர்கள் நம் முன்னோர்கள்.

பீட்சா பர்கர் போன்ற உணவுப் பழக்க வழக்கங்களால் உடல் பருமன் என்ற வியாதியை பெரும்பான்மையான சிறார்கள் மற்றும் இளைஞர்கள் கொண்டு வாழும் காலம் இது. நோய்க்கு முதற்காரணமான உணவுப் பழக்கவழக்கத்தை குறித்து ஔவையார் **நுண்மை நுகரேல்** அதாவது வடை சமோசா போன்ற எண்ணெய் பதார்த்தங்களை உண்பதை தவிர்த்துக் கொள்ளுமாறு அன்றே கூறிச் சென்றிருக்கிறார். இவ்வாறான சிற்றுண்டிகளை இடைப்பட்ட நேரங்களில் எடுத்துக் கொள்வதனால் உடல் ஆரோக்கியம் கேள்விக்குறியாகி விடுகிறது. எனவே இவற்றை தவிர்க்குமாறு நமது ஔவை பாட்டி அழகுற எடுத்துச் சொல்லி இருக்கிறார்.

இதையே இன்னும் கொஞ்சம் விரித்து பார்த்தால் சிறிய விஷயங்கள் என்றால் வாழ்க்கைக்கு பயன் தராத சில்லறை விஷயங்கள் - புகை பிடிப்பது, புறம் சொல்லுவது, சூதாடுவது, போன்ற பலன் இல்லாத விஷயங்கள் என்றும் கூறலாம்.

வாழ்க்கையில் பெரிய விஷயங்களை, நன்மை தரக்கூடிய நல்லவற்றை நுகருங்கள்.

கல்வி, ஒழுக்கம், சேவை என்று நீண்ட பலன் தருபவற்றைக் நுகருங்கள்.

தொடரும்...

அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருமீய்ச்சூர்

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'
Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

''விடையார் கொடியார் சடைமேல்
விளங்கும் பிறை வேடம்
படையார் பூதஞ் சூழப்
பாடலாடலார்
பெடையார் வரிவண்டணையும்
பிணைசேர் கொன்றையார்
விடையார் நடையொன்
றுடையார் மீய்ச் சூராரே.''
- ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தப் அருளிய
2-ஆம் திருமுறைப் பாடல்

நோய்களை நீக்கி, ஆயுளை அதிகரிக்கும் அற்புதத் திருத்தலம் திருமீய்ச்சூர் ஆகும். இத்திருக்கோயில் ப்ரதான திருக்கோயில் மற்றும் இளங்கோயில் என்ற இரண்டு திருக்கோயில்களின் சங்கமமாகத் திகழ்கிறது. அன்னை ஸ்ரீ லலிதாம்பிகையின் பெயரால் சிறப்பிக்கப்படும் பெருமைக்கும் உரியது இத்திருத்தலம் ஆகும். சூரியன் இழந்த ஒளியினைப் பெற்றதலம், மறுபிறப்பில்லா பேறு அருளும் அம்பாள் நெய்க்குள தரிசனம், ஸ்ரீ லலிதா ஸஹஸ்ரநாம பிறப்பிடம் என எண்ணற்ற பெருமைகளுக்கு சொந்தமானது திருமீய்ச்சூர் திருமுறைத் திருத்தலம் ஆகும்.

அருள் வரலாறு :

முன்பொரு சமயம் காஷ்யப முனிவரின் மனைவியரான வினதா மற்றும் கத்ரு ஆகிய இருவரும் பிள்ளை வரம் வேண்டி இத்தலத்து ஈசனை வணங்கினர். ஈசனும் இருவருக்கும் ஒவ்வொரு முட்டையைக் கொடுத்து அவற்றைப் பாதுகாக்கும் படியும், அதிலிருந்து உலகமே போற்றும் பிள்ளைகள் பிறப்பர் என்றும் அருளினார்.

வினதாவிடம் ஈசன் வழங்கிய முட்டையில் இருந்து

ஓராண்டு கழித்து கருடன் வெளிப்பட்டு, பகவான் ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணு வாகனமானார்.

இதைக் கண்ட கத்ரு தமது முட்டை இன்னும் பொறிக்க வில்லையே என்று, அவளாகவே அதனை உடைக்க முயன்றாள். அம்முட்டையில் இருந்து முழுவளர்ச்சி பெறாத அருணன் என்ற பெயரில் ஓர் பிள்ளை தோன்றினான். தமது அபசூபுத்தியால் நேர்ந்த அவலம் குறித்து ஈசனிடம் மன்னிப்பு வேண்டி உதவிட ப்ரார்த்தித்தாள்.

ஈசனும் அங்கஹினமுள்ள அருணனை சூரியனுக்கு சாரதியாக்கியதோடு, அதிகாலைப் பொழுதை அருணனின் நினைவாக அருணோதயம் என்றழைக்கவும் அருளினார்.

சூரியனின் சாரதியான அருணன் திருக்கயிலாயம் சென்று சிவபெருமானை தரிசிக்க விரும்பினார். சூரியனோ அருணனின் உடல் குறைபாடுகளைச் சுட்டிக்காட்டி நீ எப்படி கயிலாயம் செல்வாய் என்று ஏளனம் செய்தார்.

இதனால் மனம் வருந்திய அருணன் சிவபெருமானிடம் உள்ளம் உருக வேண்டினார். அருணனின் பக்தியால் மகிழ்ந்த ஈசன் அருணனுக்கு கயிலாயக் காட்சியையும், அருணனை ஏளனம் செய்த சூரியன் ஒளிகுன்றிப் போகவும் சபித்தார்.

ஒளியிழந்து கருமையான சூரியன் தம் தவறை உணர்ந்து ஈசனைப் ப்ரார்த்தித்தான். ஈசனும் இநத்த் தலம் வந்து ஏழுமாத காலம் வழிபாடுகள் செய்துவா, நீ இழந்த ஒளியினை மீண்டும் பெறலாம் என்றார்.

அவ்வாறே சூரியன் இங்கு வந்து ஈசனை வழிபட்டு மீண்டும் ஒளிபெற்றார். சூரியன் இழந்த ஒளியினை மீண்டும் பெற்ற தலம் என்பதாலேயே மீய்ச்சூர் என்று இத்தலம் வழங்கப்பட்டது.

இளங்கோயில் :

திருமீய்ச்சூர் திருக்ககோயில் கருவறைக்கு வடபுறம் இளங்கோயில் அமைந்துள்ளது. இத்திருக்கோயிலில் இறைவன் ஸ்ரீ மேகலாம்பிகா ஸமேத ஸ்ரீ சகலபுவனேஷ்வரராக திருக்காட்சி தருகிறார். இந்த இறைவனை காளி வழிபட்டு அருள் பெற்றதாகத் தலபுராணம் கூறுகிறது.

ஸ்ரீ லலிதா ஸஹஸ்ரநாம ஸ்தோத்ரம் :

இத்தலத்தில் அருளாட்சி புரியும் அம்பிகையின்

அருளாணையின் வண்ணம் வாசினி முதலான வாக்தேவதைகள் அன்னையை ஆயிரம் திருநாமங்களால் போற்றித் துதித்தனர். இந்த அற்புத ஸ்தோத்திரமே ஸ்ரீ லலிதா ஸஹஸ்ரநாமம் என்று இன்றும் நாம் அன்னையின் அருள்பெற்ற மகிழ, மலர, உயர வழிகாட்டி வருகின்றது.

அகஸ்தியருக்கு :

இந்தத் திருத்தலத்தில் தான் ஸ்ரீ ஹயக்ரீவர் ஸ்ரீ லலிதா ஸஹஸ்ரநாம ஸ்தோத்திரத்தை அகஸ்திய மாமுனிவருக்கு உபதேசம் செய்தார்.

ஸ்ரீ லலிதா நவரத்ன மாலை :

ஒரு பௌர்ணமி நன்னாளில் ஸ்ரீ அதஸ்தியர் ஸ்ரீ லலிதாம்பிகை முன்னிலையில் பக்திப் பூர்வமாக ஸ்ரீ லலிதா ஸஹஸ்ரநாம ஸ்தோத்திர பாராயணம் செய்தார். அன்னையும் மகிழ்ந்து அகஸ்தியருக்கு அருளினார். அதன் பலனாக அன்னை மீது அகஸ்தியர் ஸ்ரீ லலிதா நவரத்ன மாலை என்ற ஸ்தோத்திரத்தைத் தமிழில் அருளினார்.

எல்லாம் கிடைக்கும் :

இத்தலத்து ஸ்ரீ லலிதாம்பிகை முன்னிலையில் பக்தி சிரத்தையுடன் ஸ்ரீ லலிதா ஸஹஸ்ரநாம ஸ்தோத்ரம் மற்றும் ஸ்ரீ லலிதா நவரத்னமாலையைப் பாராயணம் செய்பவர்கள் எல்லாம் பெற்று இன்ப வாழ்வு வாழ்ந்து வருவது அனுபவம்.

மறு பிறப்பே இல்லை :

ஆண்டிற்கு மூன்று முறை - விஜயதசமி, வைகாசி பௌர்ணமி மற்றும் தை அமாவாசை ஆகிய மூன்று நாட்களில் ஸ்ரீ லலிதாம்பிகை முன்பாக 15 அடி நீளத்திற்கு வாழைஇலை போட்டு அதில் ஒன்றரை அடி உயரத்திற்கு சர்க்கரை பொங்கலை இட்டு, அதில் குளம் போன்ற அமைப்பை ஏற்படுத்தி இரண்டு டின் நெய் விடுகின்றனர். அதில் அன்னை ஸ்ரீ லலிதாம்பிகையின் திரு உருவம் பிரதிபலிக்கின்றது.

யார் ஒருவர் இந்த நெய்க்குள் தரிசனம் காண்கின்றார்களோ அவர்களுக்கு மறுபிறவியே கிடையாது என்பது நம்பிக்கை.

சிறப்புக்கள் :

1. ஒவ்வொரு ஆண்டும் சித்திரை மாதம் 21 முதல் 27 வரை சூரியக் கதிர்கள் சிவபிரான் மீது விழுவது சிறப்பு.

2. சோழர் மற்றும் பாண்டியர் கால கல்வெட்டுக்கள் திருக்கோயில் உள்ளன.
3. எமன் இத் திருக்கோயில் ஈசனை 1008 சங்காபிஷேகம் செய்து வழிபட்டதால், நாமும் 1008 சங்குகளால் ஈசனை அபிஷேகம் செய்து மகிழ ஆயுள் நீடிக்கும் என்பது நம்பிக்கை.
4. இத்தலத்து ஈசனுக்குத் தாமரை இலையில் பிரண்டைசாதம் படைத்து அன்னதானம் செய்ய நோய்கள் அகலுவது கண்கூடு.
5. நலமுடனும், வளமுடனும், ஆனந்தமுடனும் வாழ இத்தலத்தில் ஆயுஷ்ஹோமம், ம்ருத்யுஞ்ஜய ஹோமம் முதலானவை செய்யப்படுகின்றன.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	: ஸ்ரீ மேகநாதர்
இறைவி	: ஸ்ரீ சௌந்தர நாயகி (எ) ஸ்ரீ லலிதாம்பிகை
தலமரம்	: வில்வம்
தீர்த்தம்	: சூர்ய புஷ்கரணி
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	: சூரியன், கருடன், அருணன், எமன், சனீஷ்வரர், வாலி, சுக்ரீவன், அகஸ்தியர் முதலானோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர், ஸ்ரீ நாவுக்கரசர், ஸ்ரீ சேக்கிழார் முதலானோர் இத்தலத்து ஈசனுக்குப் பாமாலை சூட்டி மகிழ்ந்துள்ளனர்.

தரிசன காலம் : காலை 07.00 மணி - பகல் 12.30 மணி வரை
மாலை 04.30 மணி - இரவு 08.30 மணி வரை

தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ லலிதாம்பிகா ஸமேத ஸ்ரீ மேகநாத ஸ்வாமி திருக்கோயில்,
திருமீய்ச்சூர் - 609 405.
திருவாரூர் மாவட்டம்.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் : 04366-238170, 94448 36526, 75988 36526

அமைவிடம் :

திருமீய்ச்சூர் திருமுறை திருத்தலமானது திருவாரூர்

மயிலாடுதுறை மார்கத்தில் பேரளம் என்னும் ஊரில் இருந்து சுமார் 3 கி.மீ. தொலைவில் அமைந்துள்ளது.

மயிலாடுதுறை மற்றும் பேரளத்தில் இருந்து திருமீய்ச்சூருக்குப் பேருந்து வசதிகள் உள்ளன.

ஸ்ரீ லலிதாம்பிகா ஸமேத

ஸ்ரீ மேகநாத பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்... இணைத்திடுங்கள் இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.12.2025. **M. Sridhar**
Signature of the Publisher

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi In Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்

- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

Shabari Siksha Sansthan, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.

Posted at Salem HPO 636 001. December - 2025

Published on 5th December - 2025

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. :TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024 - 2026
Licenced to post without prepayment: TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।

Please quote your subscription number in all correspondance.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001

To

____

____

____

____

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Hindi Bala Bharathi

Third Language Hindi Text Book

Syllabus, Key books, Blue Print, Model Question Papers.

Question Paper Available for Quarterly, Halfyearly & Annual Exams at reasonable Price

- Learning becomes fun and friendly.
- Simple and Sample learning series.
- Easy exercises with english meanings.
- Multi coloured and attractive.
- Learning becomes easy and effective.
- Perfect pictures, proper words.
- Planned work for perfect learning.
- Excellent exercises to improve the language skills.

A (For LKG)
B (For UKG)
1 (For Std. I)
2 (For Std. II)
3 (For Std. III)
4 (For Std. IV)
5 (For Std. V)
6 (For Std. VI)
7 (For Std. VII)
8 (For Std. VIII)
9 (For Std. IX)